ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 17 अंक-20 जनवरी-II, 2016 (पाक्षिक) माउण्ट आबू 8.00

परमात्म शक्तियों से नारियों द्वारा विश्व परिवर्तन

त्रिदिवसीय महिला राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन शांतिवन परिसर में
भारत तथा नेपाल से छ: हज़ार महिलाओं ने लिया भाग

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय के शांतिवन परिसर में 'परमात्म शक्ति द्वारा विश्व परिवर्तन में नारी की भूमिका' विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन एवं राजयोग शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें भारत तथा नेपाल से छ: हज़ार महिलाओं ने भाग लिया।

ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका **राजयोगिनी दादी जानकी** ने कहा कि स्वयं को परिवर्तन कर विश्व परिवर्तन करने का बीड़ा उठाना है। सदा माताओं को एकता में बंधकर इस भगीरथ कार्य को बड़े निर्माण भाव से आगे बढ़ाना है।

महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी **ब्र.कु. चक्रधारी** ने कहा कि वर्तमान परिदृश्य में नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है, वह परिवर्तन का सूचक है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि मानव सभ्यता श्रेष्ठ एवं सकारात्मक परिवर्तन की ओर परमात्म शक्ति द्वारा आध्यात्मिक जागृति से बढ़ चुकी है।

राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर,महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़ ने कहा कि मातृ शक्ति के बिना यह संसार सुखमय संसार बन नहीं सकता। ब्रह्मा बाबा ने कुछ माताओं, बहनों का न्यास बनाकर चौदह वर्ष तक तपस्या द्वारा इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की नींव रखी।

दादी जानकी तथा दादी हृदयमोहिनी के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए अनिता भदेल, डॉ. प्रेरणा शेखावत, ब्र.कु. चक्रधारी, ब्र.कु. निर्वैर तथा अन्य।

मुख्य अतिथि **अनिता भदेल**,महिला बाल विकास मंत्री,राजस्थान सरकार ने भारतभूमि की मातृवत महिमा और नारी शक्ति की महिमा करते हुए सामाजिक परिवर्तन का इसे आधार बताया।

सिरोही जिले से आईं अति. पुलिस अधीक्षक **डॉ. प्रेरणा शेखावत** ने कहा कि यहाँ महिलाओं को सशक्त किया जाता है, ये बड़ी खुशी की बात है। महिलाओं के अंदर ममता, करुणा, त्याग की भावना सहज होती है। इन मूल्यों के आधार पर ही वे अपने करियर तथा कल्चर का बैलेंस रखती हैं।

राजकोट, गुजरात से आयीं प्रसिद्ध समाज सेवी **डॉ. मधुरिका जडेजा** ने कहा कि आज इस पावन भूमि ने हमें यह एहसास कराया है कि हम स्व परिवर्तन के द्वारा विश्व परिवर्तन कर सकते हैं। उन्होंने भ्रूण हत्या को घृणित कार्य बताया और कहा कि क्या जन्म प्रदान करने वाली माँ को ही जन्म लेने का अधिकार नहीं है!

ब्र.कु. शारदा,राष्ट्रीय संयोजिका, महिला प्रभाग ने इस सम्मेलन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज स्वयं परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा विश्व के महापरिवर्तन का कार्य नारी शक्ति को जागृत कर करा रहे हैं। तो हम सब को भी उस परमशक्ति के साथ जुड़कर इस कार्य को अंजाम तक पहुँचाना ही होगा।

ब्र.कु. डॉ. सविता,मुख्यालय संयोजिका,महिला प्रभाग ने प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं से सभी को अवगत कराया।

मनन चतुर्वेदी,अध्यक्षा,बाल विकास सुरक्षा समिति,राजस्थान सरकार ने मुख्य अतिथि के रूप में कहा कि आज की भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में आध्यात्मिकता तथा व्यवहारिकता का बैलेंस बनाकर चलने की आवश्यकता है।

जयपुर से आयीं कांग्रेस जिलाध्यक्ष **सोनम** ने कहा कि यदि महिलाएँ अपने अंदर आध्यात्मिक शक्ति का समावेश करें तो किसी भी परिस्थिति का सामना कर समाज के किसी भी क्षेत्र में ऊँचाइयों को छूने में पीछे नहीं रह सकतीं।

वरिष्ठ राजयोगी **ब्र.कु. करुणा**, अध्यक्ष,मीडिया प्रभाग ने अपने वक्तव्य में वंदे मातरम् के अभिवादन एवं मातृ शक्ति की महिमा की बात की तथा कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एक सौ चालीस देशों में विश्व की एकमात्र महिलाओं द्वारा संचालित संस्था इस बात का परिचायक है।

इस कार्यक्रम में काठमाण्डु नेपाल से आयीं प्रमिला मालाकार, राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू, जयपुर से आयीं ब्र.कु. पूनम, जबलपुर से आयीं नगर निगम अध्यक्षा सुमित्रा बाल्मीक, अजमेर से आये महापौर सांपला, भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान एम्स की कार्डिएक और एनेस्थीसिया विभाग दिल्ली की विभागाध्यक्षा डॉ. उषा किरन, गुजरात से आये अंतर्राष्ट्रीय मां संस्थान की चेयरमैन मंजिल नानावती, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बी.के.गीता, उदयपुर से आयीं लायन्स क्लब की जिला अध्यक्षा रेनु बंतिया, राजयोगिनी ब्र.कु. उषा, मधु शर्मा,अध्यक्ष महिला मोर्चा भा.ज.पा. आदि ने अपने अपने विचार व्यक्त किये।

आनंदमय जीवन के लिए रहें खुश : ब्र.कु. शिवानी

शहर के आमंत्रित तीन हज़ार से भी ज़्यादा गणमान्य जन हुए शामिल

कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. निहा के साथ चम्पकलाल गंगर, संजय भाटिया, अतुल पाटिल तथा अन्य। सभागार में उपस्थित शहर के गणमान्य लोग।

मुम्बई-गामदेवी। 'विज़डम फॉर ब्लिसफुल लाइफ' विषय पर अपने अनुभव युक्त वक्तव्य देते हुए जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि जो हम जीवन जी रहे हैं, उसी जीवन में थोड़ा सा सोचने के तौर-तरीके पर ध्यान दें तो हमारा जीवन खुशियों में बीत सकता है। उन्होंने कहा कि हमें अपनी सोच के प्रति जागरुक रहना है, क्योंकि जैसा हम दूसरों के प्रति सोचते हैं वही तो हम पाते हैं। विशेषज्ञा ने कहा कि जीवन में श्रेष्ठ विचारों को अपने कर्मभूमि में आकार देकर अपनी तकदीर को बदल सकते हैं। उन्होंने रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में आने वाली चुनौतियों के मध्य खुश रहने के लिए अपनी स्व-स्थिति को स्थिर रखकर कार्य करने को कहा। उन्होंने कहा कि हमें दिन का आरंभ अपने आपको सशक्त बनाकर करना है। परिस्थितियाँ हमारे से ज़्यादा शक्तिशाली नहीं, बल्कि हम सोच सोच कर अपने आपको कमज़ोर महसूस करते हैं। स्वयं पर रहम कर स्वयं को ही आशीर्वाद देना है, क्योंकि कई बातें जो हमारी मनोस्थिति को अशांत करती हैं, उन्हें अपने मन का हिस्सा न बनाकर उससे सावधान रहना होगा। इस तरह अपनी मनोस्थिति को खुश और शांत रख सकते हैं।

शुरुआत में क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. निहा ने चम्पकलाल गंगर, संजय भाटिया, चेयरमैन ऑफ मुम्बई पोर्ट ट्रस्ट तथा अतुल पाटिल,एस.पी.,एडिशनल कमिश्नर ऑफ पुलिस का फूलों से स्वागत किया। तीन हज़ार लोगों से भरा हुआ 'योगी हॉल' योगमय वातारण के प्रकम्पन से बहुत ही सुकूनभरा और आनंदमयी लग रहा था। ये शांति के प्रकम्पन सभी के दिल को आराम देने वाले थे। तत्पश्चात् चम्पकलाल भाई और संजय भाटिया ने ब्र.कु. शिवानी का पुष्पों और शॉल से स्वागत किया।

आओ जुड़ें इस भागीरथी कार्य में...

कहते हैं ना 'द गॉड मेड मैन इन हिज़ ओन इमेज' अर्थात् जब परमात्मा ने मनुष्य को गढ़ा तब उसके अंदर वो सर्वशक्तियाँ, सुंदरता और पवित्रता की खुशबू से उसे सुसज्जित किया जो उसमें हैं। जबकि आज का मानव दु:ख, अशांति, तनाव व अवसाद रूपी वातावरण के बोझ तले जीवन व्यतीत कर रहा है, जहाँ वो 'मैं-मेरे' के लगाव से इतना ग्रसित हो गया कि जिसके परिणामस्वरूप वो दु:ख के दलदल में फँसता चला गया। तो ऐसे समय में परमात्मा के साथ मिलकर कुछेक मनुष्य आत्माएँ इन प्रभावों से परे होकर नई दुनिया के निर्माण का भगीरथ कार्य करने लग गयीं। परमात्मा का इस धरा पर आगमन होता ही इसीलिए है कि सारे जग के मनुष्य एवं वातावरण को सुख, शांति एवं खुशनुमा बनाया जाये।

- ब्र. कु. गंगाधर

करीब आठ दशक पूर्व नये एवं श्रेष्ठ संकल्प की शुरुआत एक छोटे से पौधे के रूप में की गई, जो आज एक वट वृक्ष बनकर हमारे सामने उभर आई है। स्वयं निराकार परमात्मा शिव ने स्वर्णिम संसार की स्थापना करने हेतु इस कार्य की नींव रखी। हमने शास्त्रों में पढ़ा भी, सुना भी कि परमात्मा से हमारा सम्बन्ध ''त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम मम देव देव।।'' माता-पिता, शिक्षक, सद्गुरु तथा बन्धु रूप में है। ये सिर्फ गाते तो आए, लेकिन ये समझ में नहीं आया, कि कब वो हमारा पिता तुल्य होगा, कब वो शिक्षक बनकर शिक्षा देगा और कब सद्गुरू बनकर हमारी सद्गति करेगा। लेकिन ये घटना आठ दशक के पूर्व इस भारत भूमि पर घटित हुई। हमने उसे तब पहचाना, जब उन्होंने ही आकर स्वयं का और हमारे बीच के सम्बन्ध का परिचय दिया और कहा कि आप ही मेरे बच्चे हो, जिन्हें विश्व कल्याण के लिए एक साथ मिलकर भगीरथ कार्य का बीड़ा उठाना है। परमात्मा शिव के निर्देशन में, उनकी पालना में पलने वाले अनेक जिज्ञासु स्वेच्छा से उनकी श्रेष्ठ पालना के अंदर पले भी और उनकी शिक्षाओं को ग्रहण करके अपने आपको तैयार किया।

जैसे कि कोई भी पुराने मकान में रहते हुए ही नए मकान की नींव या मकान की कल्पना करके खाका तैयार करते हैं, ऐसे ही ये मनुष्य आत्माएँ रहे तो इस पुरानी सृष्टि में, लेकिन उनके सारे संकल्प, कर्म और बुद्धि, सब चीज़ें ही नई सृष्टि के निर्माण के लिए लगी रही। कहते हैं ना 'द गॉड मेड मैन इन हिज़ ओन इमेज' अर्थात् कि जब परमात्मा ने मनुष्य को गढ़ा तब उसके अंदर वो सर्वशक्तियाँ, सुंदरता और पवित्रता की खुशबू से उसे सुसज्जित किया जो उसके अंदर हैं। जबकि आज का मानव दु:ख, अशांति, तनाव व अवसाद रूपी वातावरण के बोझ तले जीवन व्यतीत कर रहा है, जहाँ वो - 'मैं-मेरे' के लगाव से इतना ग्रसित हो गया कि जिसके परिणामस्वरूप वो दु:ख के दलदल में फँसता चला गया। तो ऐसे समय में परमात्मा के साथ मिलकर कुछेक मनुष्य आत्माएँ इन प्रभावों से परे होकर नई दुनिया के निर्माण का भगीरथ कार्य करने लग गयीं।

वैसे तो हम सभी परमात्मा को याद करते हैं, लेकिन उनका कार्य इस कालचक्र में कब और कैसे होता है, ये सही-सही रूप में हमें मालूम ही नहीं हो पाया। जिसके कारण हमने जाने-अनजाने भक्ति-पूजा, यात्राएँ की, उन्हें पुकारते रहे और याचनाएँ करते रहे। लेकिन हमारा उनसे ना ही संपर्क हुआ और ना ही वे हमें मिले ही। क्योंकि उनके आने का समय ही तब है, जब चारो ओर अशांति, दु:ख के काले बादल इस सृष्टि पर छाये रहते हैं। हम आपको ये बताना चाहते हैं कि अस्सी वर्ष पूर्व स्वयं परमात्मा द्वारा श्रेष्ठता की रखी गई नींव संसार में सबको एक श्रेष्ठता का मार्ग दिखा रही है। जहाँ हमारे मनइच्छित सुंदर समाज, सुंदर विश्व का निर्माण निकट भविष्य में होगा। अब हम आपको ये बताना

- शेष पेज 4 पर

आत्म अभिमानी स्थिति के अभ्यास से योग बहुत सहज

बाबा ने निज ज्ञान का सार ऐसा समझाया है जो ज़्यादा बुद्धि चलानी नहीं पड़ती है। बड़ा अच्छा फायदा यह है, मैं कोई भी बात में यह बात, वह बात... बुद्धि नहीं चलाती। हम राज़ी हैं तो खुश हैं। थोड़ा भी नाराज़ हैं तो राज़ी भी थोड़ा हैं। तो यह अपना चार्ट अभी अभी देखो कभी नाराज़ तो नहीं होता हूँ? बाबा आप कहते हो नाराज़ नहीं होना, पर यह गलत करता रहे मैं देखती रहूँ! यह क्या है? यह तो गलती मेरी हो गयी। ज्ञान का गुह्य राज़ है शान्ति से कर्म भले करो, यह राजयोग हमारा कर्मयोग भी है। कर्मेन्द्रियां कर्म न करें तो योग कैसे लगेगा? वैसे योग में कोई मेहनत नहीं है। अपने आप अपने को भाग्यवान समझते हैं, आत्म-अभिमानी स्थिति बड़ा सुखदाई है। कोई भी घड़ी देह-अभिमान खींचे नहीं। हमारे अन्दर यही तात, बात हो कि बाबा को फॉलो करें।

ब्रह्माबाबा वन्डरफुल है सदा कहेगा मैं कुछ नहीं करता, वो करता, कराता है। करायेगा किससे? भले यह कहता मैं नहीं करता, पर वो कहता मैं इनसे ही तो कराता हूँ। वो करनकरावनहार है। कई पूछते हैं बाबा को कैसे याद करूँ? शिवबाबा कहता है इसको देखो ना, यह कैसे याद करता है। औरों को याद दिलाता है। ब्रह्मा बाबा इतना याद में रहता है, जो आज अव्यक्त होकर के भी हमें राजयोग सिखा रहा है। नुमाशाम के टाइम क्लास में हाज़िरी ज़रूर भरना चाहिए, नहीं तो दिल में खाता है, इधर उधर बैठेंगे। परन्तु यहाँ जो एकाग्रता की शक्ति का अनुभव होता है, वह कहीं नहीं हो सकता। नया भी कोई आयेगा तो उसको भी सहज समझ में आ जायेगा, मैं आत्मा हूँ शरीर नहीं हूँ। आत्मा अब शरीर का अभिमान छोड़ आत्म-अभिमानी स्थिति में रहे।

अपना पुरुषार्थ अच्छा करो पर जहाँ जिस एरिया में जिस सेवास्थान में रहो वहाँ नज़दीक में जो भी सेन्टर हैं या सेवाधारी हैं उनसे भी अच्छे सम्बन्ध रखो। अपने को हेड समझ करके नहीं रहो, पर सबको अपनेपन की फीलिंग आवे। नहीं तो साथ में रहते भी अपनेपन की फीलिंग नहीं है, सूखे हैं। भले हमें आवाज़ से नहीं हँसना है पर मुस्कराने में कोई खर्चा नहीं है, और मुस्कराने से कोई भी बात मुश्किल नहीं है। सब सहज है। तो मैं कहती हूँ योग में मेहनत नहीं है पर मोहब्बत के कारण बहुत सहज है।

ड्रामा में कदम कदम पर, जहाँ कदम वहाँ कमाई है। और जहाँ ज़रूरत नहीं है वहाँ कदम जायेगा ही नहीं, और आपको पता होगा फरिश्तों के पाँव धरती पर नहीं होते हैं। देवताओं के पाँव धरती पर होंगे, पर सतयुग में। अभी जो फरिश्ता लाइफ है ना, तो पाँव धरती पर नहीं हैं यानी ऐसे नहीं एक जगह बैठे हैं या खड़े हुए हैं परन्तु कहाँ जाऊं क्या करूँ? नहीं, शान्त। शान्ति से जहाँ सेवा वहाँ अपने आप सेवा सामने आती है या हम सेवा में जाते हैं। परन्तु ज्ञान योग धारणा यह तीन तो पहले सदा ही हमारे पास हों। ज्ञान मैं कौन, फिर मेरा कौन तो योग हो गया। फिर ईश्वरीय परिवार के साथ हैं, भण्डारे में खाना बना रहे हैं, रोटी पका रहे हैं या रोटी बेल रहे हैं या सब्जी काट रहे हैं, जो भी सेवा है परन्तु सेवा करते भी कितना अच्छा वायुमण्डल है। कितना शान्ति से भोजन बनाते हैं। भोजन परोसने वाले भी कितने शान्ति से बैठे हैं। संगमयुग पर अगर हम सेवा न करें तो भी ठीक नहीं। ज्ञान योग धारणा - सेवा कराती है, और खास बाबा ने हम बच्चों को यह इशारा दिया है, इस शरीर से या पूर्व जन्म में कोई गलती हो गयी हो, कोई रांग कर्म हो गया हो तो उसे योगबल से खलास करो। एकांत में बैठ देखो मेरे में कोई पुरानी बात तो नहीं है? है तो उसे खलास करो। कर्मातीत अवस्था क्या है? कर्म कर रहे हैं पर अवस्था कर्मातीत है? कोई भी जो योग्य काम नहीं है उनसे मुक्ति, और जो आवश्यक है उसमें जीवनमुक्त हैं। तो मुक्ति जीवनमुक्ति जैसे बाबा ने वर्से में दिया है। तो बाबा हमेशा कहते हैं ज़्यादा याद न आवे, बाप और वर्सा, बस। सिम्पल बात है। यह लाइफ हमको वर्से में मिली है। अगर थोड़ा भी एक्युरेट नहीं है तो बाप का नाम बाला नहीं हो सकता है। तो मुख्य बात है अटेन्शन, टेन्शन नहीं हो पर अटेन्शन, जिससे कभी भी, कहीं भी, कुछ भी हो जाये - व्यर्थ संकल्प नहीं आ सकता। व्यर्थ बोल मुँह से नहीं बोल सकते। दृष्टि में सच्चाई और प्रेम है।

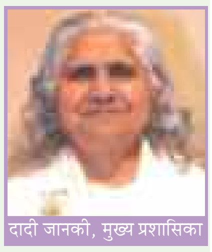

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बाबा का बनना माना सदा खुश रहना

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

सभी बाबा की याद में लवलीन होके बैठे हैं और बाबा भी हरेक लवलीन बच्चे को देख कितना खुश हो रहा है! आप भी खुश हो रहे हैं और बाबा भी खुश हो रहा है। बाबा जो कहता है, जो चाहता है वही हमको करके दिखाना है। अभी समय दिन प्रतिदिन नाज़ुक तो आना ही है, वायुमंडल के अनुसार इतना समय किसी को नहीं मिलेगा, तो ऐसे समय पर अपने खुशनुमा चेहरे द्वारा सेवा करनी है। खुशनुमा चेहरे को देख करके जो भी दिल में दु:ख होगा, वो उनको कुछ न कुछ सहायता मिलेगी क्योंकि बाबा कहता है समय ऐसा नहीं मिलेगा जो आप उनको कोर्स आदि कराओ, लेकिन समय अनुसार तुम्हारा चेहरा सेवा करे। चेहरे में ऐसी खुशबू हो, ऐसी सुख की लहर हो जो आपकी लहर उन तक पहुँचे और वो भी सुखमय, खुशनुमा हो जाए।

दुनिया में लोग खुशी के लिए क्या-क्या करते हैं, लेकिन यहाँ सिर्फ मेरा बाबा कहा और खुशी आ गई, मीठा बाबा कहा खुशी आ गई, प्यारा बाबा कहा खुश हो गए। तो बाबा का बनना माना सदा खुश रहना।

तो बाबा चाहता है, कोई बात भी आवे तो भी हमारा चेहरा खुशनुमा होना चाहिए। चेहरे में फर्क नहीं होना चाहिए, क्योंकि बाबा ने हमारे अंदर खुशी का भंडार भर दिया है। तो यह चेक करो कि अमृतवेले से लेके खुशनुमा रहते हैं? खुशी तो गायब नहीं होती? और खुशनुमा को देख करके अपने में भी फील करता है कि मैं भी ऐसा बनूँ, इसीलिए बाबा कहते हैं, खुशी को कभी जाने नहीं दो, क्योंकि खुशी की एक करामात है जो और चीज़ों में नहीं है। बातें तो होंगी कलियुग है और बाबा तो कहते हैं, आपका तो माया से बहुत प्यार है ना, तो वो खिटखिट तो करती है थोड़ा बहुत, लेकिन आपकी खुशी नहीं जाये। आपका चेहरा हमेशा खुशमिज़ाज रहे। तो नोट करते हो, अमृतवेले से हमारा चेहरा खुशनुमा रहता है? अगर नहीं भी रहता है, उसको उसी समय ठीक करो, क्योंकि आने वाले समय में आपका यह खुशनुमा चेहरा ही सर्विस करेगा। तो अभी से जिस विधि से बाबा चाहता है सर्विस करना, वैसे हम सर्विस कर सकेंगे। सबसे प्यारे सर्विसएबुल बनेंगे ना! बातें तो आयेंगी क्योंकि अभी पास का सर्टिफिकेट तो नहीं लिया है ना। पास होने वाले हैं, उसी खुशी में हैं, होना तो है ना सभी को पास, तो बाबा के पास रहेंगे, पास होंगे और औरों को भी पास करायेंगे।

बाबा हरेक का चेहरा चेक करता है, सारे दिन में कितना समय खुशनुमा रहा और कितना समय और बातों में लगा या कितना समय उलझन में रहा? बाबा कभी भी मिलता है तो खुशनुमा चेहरे से मिलता है ना, जैसे बाप वैसे हम बच्चे। फॉलो करने वाले हैं। अगर सदा खुशनुमा रहने का संस्कार नहीं होगा तो हम सेवा क्या करेंगे! बाबा के पास सेवाधारी हम ही हैं, बाबा भी है, साथ चल रहे हैं और बाबा के साथ ही पहुँचेंगे वतन में। तो सभी ठीक हैं? कितना परसेन्ट? बाबा जब भी देखे, मेरा बच्चा... देख करके कहे वाह!

खुशनुमा खुशी में रहा है, बाबा कितना खुश होगा! और देखेगा कि यह तो उलझन में बैठा है तो सोचेगा ना, क्या हुआ बच्चे को। तो खुशी हमारे साथ रहे, हो सकता है ना, और है क्या हमारे पास खुशी के सिवाए। दु:ख हमारे पास आ सकता है? अशांति आ सकती है? नहीं। क्योंकि बाबा हमारे साथ है। सभी ने बाबा को दिल में अच्छी तरह से बिठाया है ना, तो बाबा अंदर बैठा हुआ है, और खुशी नहीं होगी तो क्या कहेंगे? इसीलिए सदा खुश।

सिर्फ अपने रोल पर ध्यान दें

-गतांक से आगे...

प्रश्नः- वो कभी भी किसी को पता चलने ही नहीं देते कि ऐसा हुआ, इतना फटाफट डिज़ाइन कर लिया जाता है।

उत्तरः- वो क्या करते हैं। वो अपने ही रोल पर और अच्छी तरह से कॉन्सन्ट्रेट करते ताकि उनके रोल और उनके डायलॉग से मुझे वो 'क्लू' मिल जाता कि मुझसे कहाँ गलती हो रही है। अगर कोई मेरे आस-पास कुछ गलत कर रहा है, कुछ गलत डायलॉग बोल रहा है, मेरे अनुसार गलत डायलॉग है, गलत लाइन है, सब कुछ गलत है तब मुझे अपने रोल पर और भी ज़्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है।

लेकिन जहाँ आपने वो भी लाइन खराब कर दी तो मैंने भी अपनी लाइन खराब कर दी, हम दोनों ने पूरी लाइन को, पूरे डायलॉग को इतना धूमिल कर दिया कि उससे पूरा सीन ही खराब हो गया, और फिर बाद में हमें वह ड्रामा पसंद ही नहीं आता है, फिर हम कहते हैं कि ये जीवन ऐसा क्यों है! इस प्वाइंट से हमें हमारे मन में सफाई रखने में बहुत मदद मिलेगी, क्योंकि हम अपनी बहुत सारी एनर्जी यूँ ही नष्ट कर देते हैं।

हम दिन भर में एक-दो की स्क्रीप्ट लिख रहे हों, चार की लिख रहे हों वहां तक तो ठीक है, लेकिन हम दिनभर में कितने एक्टर्स की स्क्रीप्ट लिखने की कोशिश कर रहे हैं। यह तो हमारी एनर्जी नष्ट हुई ना। अब इसको हम एक होमवर्क के रूप से देखें, आज एक दिन हम ट्राय करके देखें कि मैं कैसा फील करता हूँ जब हम औरों की स्क्रीप्ट में हस्तक्षेप न करके स्वयं के स्क्रीप्ट को देखते हैं।

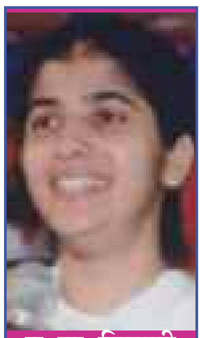

ब्र. कु. शिवानी

प्रश्नः- वास्तव में हमें लोगों को कंट्रोल करना, मूल्यांकन करना बंद कर देना चाहिए। इसके बाद सचमुच में आप बहुत अच्छा अनुभव करेंगे।

उत्तरः- पर ये जितना आसान लग रहा है, उतना आसान है नहीं। जैसे आपने भी पूछा था कि आपकी खुशी का इंडेक्स ऊपर-नीचे होता है कि नहीं? मैंने यही देखा कि खुशी ऊपर-नीचे होने का सबसे बड़ा कारण एक यह भी होता है। अब जैसे ही हमारा ध्यान जाता है कि इनको ऐसा नहीं करना चाहिए था तो क्या यह स्थिरता है? नहीं। सुबह में उठे मेडिटेशन किया बहुत अच्छा, और हमारा मन चला गया कि इनको क्या बोलना चाहिए था, इनको क्या करना चाहिए था। अगर आप उस एक चीज़ पर काम कर लो तो आपका मन एकदम स्थिर रहेगा। देयर इज़ नथिंग इल्स आऊट इन द वर्ल्ड। जिससे कोई भी दिक्कत होने वाली नहीं है। जब हम परेशान हो जाते हैं तो अपने आपको बहुत ही सावधानी से चेक करें, क्योंकि यह बहुत जल्दी फिसल जाता है। ये ऐसा संस्कार है जिसके लिए हमें अपने मन को बार-बार याद दिलाना पड़ता है। अगर हमारा मन किसी के बारे में जजमेंट पास कर रहा है। तो आप सचेत हो जाइये कि यह वेस्ट ऑफ एनर्जी है।

जब हम इस अवेयरनेस के साथ ध्यान देते हैं तो हम देखते हैं कि लोगों को कंट्रोल करने वाली लिस्ट कम होती जाती है और फिर अंत में खत्म ही हो जाती है। फिर हम अन्त में पाते हैं कि कोई भी नहीं है जो मेरे कंट्रोल में है। पहले हम क्या करते थे कि गाड़ी चलाते हुए भी हरेक ड्राइवर के ऊपर भी व्यंग करते थे कि ऐसे चला रहे हैं, लाइन में नहीं खड़े हैं, टोल पर खड़े हैं, गलत साइड से ओवरटेक कर रहे हैं। अब आप अपनी सोच को बदल दें कि उन्हें फिर भी ओवरटेक करना ही है, उन्हें वो सब करना ही है, ये सब मेरे कंट्रोल से चलने वाला नहीं है। हमें तो सिर्फ अपने ऊपर नियंत्रण रखना है। जब हम ऐसा सोचेंगे तो इससे हमें बहुत ज़्यादा खुशी मिलेगी। - क्रमशः

रामगंजमंडी-राज.। 'स्वच्छ समाज सवस्थ समाज' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए जगदीश सिंह सतावत,अध्यक्ष,कोटा स्टोन इंडस्ट्रीज़ एसोसिएशन, ब्र.कु. हेमलता, ब्र.कु. ओंकार, ब्र.कु. समिता, ब्र.कु. उर्मिला तथा ब्र.कु. शीतल।

स्वास्थ्य

किडनी के लिए अति लाभकारी एवं सुरक्षित इलाज

सिर्फ 10 दिनों में किडनी को नया जीवन दे सकता है यह अनुभूत प्रयोग

- किडनी सिकुड़ना
- किनी फेल्यौर
- युरीन कम आना
- ब्लैडर युरीन से भरा रहना
- युरीन पास करते वक्त दर्द होना
- युरीन में जलन होना
- बार-बार पथरी बनना

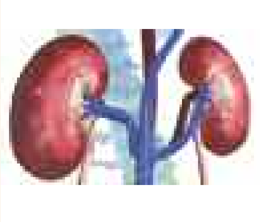

यह प्रयोग किडनी के कार्य को व्यवस्थित बना देता है। जिन लोगों को किडनी की समस्या है उनके लिये तो फायदेकारक है ही, लेकिन जिनको कोई भी समस्या नहीं, उनकी किडनी को भी स्वस्थ रखता है यह प्रयोग। यह प्रयोग हमारे द्वारा परिक्षित है एवं 2 लोगों को काफी फायदा हुआ है।

संजीवनी हेल्थकेयर द्वारा किडनी बचाने वाला अनुभूत प्रयोग निम्नलिखित है।

- फ्रेश हरा धनिया 40 ग्राम .
- सूखा काला अंगूर 20 ग्राम
- सौंफ बीज 10 ग्राम
- पानी 1 ग्लास

प्रयोग विधि

– ऊपर बताई गई चीज़ों को मिक्स करके मिक्सर में क्रश करें एवं एक ग्लास पानी मिला दीजिये और सुबह खाली पेट यह ज्यूस 1 ही खुराक में पी लीजिये। सिर्फ पाँच या दस दिनों के प्रयोग से आप असाधारण लाभ महसूस करेंगे।

डॉ. प्रयाग डाभी
संजीवनी हेल्थकेयर,भावनगर,गुज.
मो.- 9033744381

सादुल शहर-राज.। परमात्म ज्ञान से विश्व परिवर्तन के तहत 'राजयोग द्वारा किसान सशक्तिकरण एवं नशा मुक्त समाज की स्थापना' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. मोहिनी दीदी, ब्र.कु. माधवी, ब्र.कु. बिन्दु, गुरबख्श सिंह ग्रेवाल,क्र.वि.स.स. चेयरमैन, डॉ. नितिन सिंह, सुरेश कस्वां,उप निरीक्षक, सुदेश गर्ग,पूर्व अध्यक्ष,व्यापार मंडल, मदन अरोड़ा, पत्रकार,राजस्थान पत्रिका तथा अन्य।

सीकर-राज.। 15 वर्षों से ईश्वरीय श्रीमत अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले भाई बहनों के सम्मान समारोह में उनके साथ उपस्थित हैं ब्र.कु. पूनम,ज़ोन इंचार्ज,जयपुर राजापार्क तथा अन्य।

राँची-झारखण्ड। 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ तथा विश्व परिवर्तन में नारी की भूमिका' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राज्यपाल द्रौपदी मुरमू। साथ हैं महुआ मांझी,अध्यक्ष,महिला आयोग तथा ब्र.कु. निर्मला।

कानपुर-बर्रा(उ.प्र.)। राज्यपाल राम नाइक को नये भवन के उद्घाटन के लिए आमंत्रित करने के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दुलारी दीदी। साथ हैं पूर्व मंत्री बालचन्द्र मिश्रा, ब्र.कु. शशि तथा ब्र.कु. मानसिंह।

करनाल-हरियाणा। गीता जयंती महोत्सव पर आयोजित मेले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् स्टेट मिनिस्टर करनदेव काम्बोज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रेम तथा ब्र.कु. मेहरचंद।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ओम शांति रिट्रीट सेंटर के 15वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यममंत्री हरी भाई चौधरी, असम एवं झारखण्ड के पूर्व राज्यपाल सैयद सिब्ते रज़ी, दिल्ली सरकार के पूर्व सचिव राकेश मेहता, ब्र.कु. बृजमोहन, राजयोगिनी दादी कमलमणि, ब्र.कु. शुक्ला, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. पुष्पा तथा अन्य।

मेरठ। दयाल ग्रुप ऑफ फर्टिलाइज़र्स के डायरेक्टर अभय दयाल तथा श्रीमति गीता कुमारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता तथा ब्र.कु. डॉ. सुनीता चंदक।

नजिबावाद-उ.प्र.। साहू जैन डिग्री कॉलेज नजिबाबाद के प्रिन्सीपल को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता।

शारजाह-दुबई। शारजाह चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज़ में आयोजित ग्लोबल लीडरशिप कॉन्फ्रेन्स एंड मिडल ईस्ट एक्सीलेंस अवार्ड-2016 में ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी को मिला ग्लोबल लीडरशिप अवार्ड-2016, जिसे प्राप्त करते हुए ब्र.कु. ज्योतिका।

मॉस्को-रशिया। सिविक चेम्बर ऑफ द रशियन फेडरेशन में 'सेफ्टी एंड प्रेवेन्शन ऑफ चिल्ड्रेन्स रोड ट्रैफिक इंजुरीज़' विषयक कॉन्फ्रेन्स को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुधा,डायरेक्टर, ब्रह्माकुमारीज़,सेंटर फॉर स्पीरिच्युअल डेवलपमेंट।

ब्रह्मपुर-ओडिशा। प्रभु उपहार रिट्रीट सेंटर में नवनिर्मित 'ज्ञान निधि भवन' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. बृजमोहन तथा ब्र.कु.आशा,गुरुग्राम। साथ हैं अन्य ब्र.कु. बहनें।

जयपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू के शांतिवन परिसर के मुख्य अभियंता ब्र.कु. भरत को समाज में उत्कृष्ट सामाजिक कार्यों के लिए जयपुर आमेर में संस्कृति युवा संस्थान की ओर से आयोजित समारोह में 'राजस्थान गौरव अवार्ड' से सम्मानित करते हुए पूर्व राज्यपाल बी.एल. जोशी, पूर्व राजमाता पद्मिनी देवी, संस्था के प्रधान संरक्षक लोकेन्द्र कानलवी, एच.सी. गणेशिया, चित्रा गोयल, पं. सुरेश मिश्रा तथा अन्य।

दिल्ली-सिरी फोर्ट। ब्रह्माकुमारीज़ दिल्ली आई.टी. विंग तथा सिरी फोर्ट सेवाकेन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में दिल्ली ज़ोन के बी.के. आई.टी. टीम प्रोफेशनल्स के लिए कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में तन्मय चक्रवर्ती,ग्लोबल हेड,गवर्नमेंट इंडस्ट्री सोल्यूशन यूनिट,टी.सी.एस., ब्र.कु. संजीव गुप्ता,आई.टी. विंग कोऑर्डिनेटर,नॉर्दन इंडिया, ब्र.कु. रमा, अनिता बहन,एच.सी.एल. तथा अन्य।

बस्ती-उ.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं डी.एम. नरेन्द्र सिंह पटेल, एस.पी. कृपाशंकर सिंह, डी.आई.जी. लक्ष्मीनारायण, रानी आशिमा सिंह, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

कुदरती रचना के क्रमानुसार परिवर्तन अति सहज

गतांक से आगे...

जिस प्रकार मनुष्यात्माएँ रात को सारा कर्म समेटकर के सो जाती हैं, ठीक इसी प्रकार आत्मायें कल्प के अंत में अर्थात, कलियुग जब पूरा होता है, तो उस समय परमधाम जाती हैं। आत्मा, परमात्मा जैसे स्वरूप अर्थात् प्रकृति को प्राप्त करती है। अर्थात् उस स्वरूप में जाकर कुछ क्षण के लिए परमधाम में विश्राम करती है। फिर कल्प का आरंभ होता है, अर्थात् सुबह होती है, या सतयुग का प्रारंभ होता है। उस समय पुन:- वह दैवी संस्कारों में प्रवेश पाती है। प्रवेश पाकर के जैसे नये सिरे से अपना पार्ट बजाने के लिए तैयार हो जाती है।

सतयुग का समय है ही - संपूर्ण सत्यता का समय। जहाँ किसी भी प्रकार की असत्यता का नामो निशान नहीं है। जैसे सुबह के समय जब लालिमा होती है, प्राय: यह कितना श्रेष्ठ समय होता है। सुबह-सुबह के समय में किसी को बुरा कार्य करने की प्रेरणा नहीं होती है। रात्रि के समय में बुरा कर्म होता है संसार में। सुबह के समय में किसी के मन में भी बुरी भावनायें नहीं होती हैं। ठीक इसी तरह जब सतयुग का समय होता है, उस समय हर आत्मा के दैवी संस्कार जागृत होते हैं, उसमें वो प्रवेश पाते हैं। सारी दुनिया में सत्यता का सम्पूर्ण समय हो जाता है। इस तरह कल्प का आरंभ होता है। यह वो पहला पहर आरंभ होता है जबकि आत्माएं ईश्वर के समान भाव को प्राप्त हो जाती हैं। वहीं जब कलियुग का अंत आता है, तो उस समय एक वैराग्य आता है। आज दुनिया में जिस प्रकार के कृत्य हो रहे हैं, ये कृत्य मनुष्य में कौन सी भावना को जागृत कर रहे हैं? दिन प्रतिदिन इस संसार के प्रति विरक्ति और वैराग्य का भाव उत्पन्न हो रहा है कि ऐसी दुनिया कब तक चलेगी। हरेक के अंदर एक वैराग्य वृत्ति जागृत होती है। ये वैराग्य और विद्रोह की वृत्ति जो है, ये परमात्मा के समान भाव को पैदा करती है। वहीं कल्प का अंत है। जिसमें शरीर का परिवर्तन, काल का परिवर्तन, युग का परिवर्तन निश्चित है। इस तरह से यह समय परिवर्तन का चक्र है। कलियुग से सतयुग का युग परिवर्तन से हरेक के शरीरों का भी परिवर्तन हो जाता है। कलियुगी तमोप्रधान प्रकृति का बना हुआ शरीर ही परिवर्तित होकर के, सतयुगी सतोप्रधान प्रकृति के आधार पर हम दैवी शरीर को प्राप्त करते हैं। उस दुनिया में जाने के लिए हम स्वयं पात्र बनते हैं।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

कई बार कई लोग सोचते हैं कि इतना घोर पापाचार का युग कलियुग है, यह सतयुग में कैसे बदल जायेगा। कोई मनुष्य का काम नहीं है इसको बदलना। जिस प्रकार घोर अंधेरी अमावस्या की रात सुनहरी सुबह में अपने आप परिवर्तित हो जाती है। ये संसार का चक्र ही ऐसा है जो घोर अंधेरी रात भी सुनहरी सुबह में कब बदल जाती है, पता ही नहीं चलता है। कोई सारी रात भी बैठ जाये देखने के लिए कि सुबह कैसे आती है मैं देखूँ, लेकिन भोर कब हो जाती है यह पता ही नहीं चलता है।

ये कुदरत की रचना में ऐसा क्रम बना हुआ है कि वो परिवर्तन उत्तरोत्तर सहज रूप से होने लगता है कि मनुष्य समझ नहीं पाता है। ठीक इसी प्रकार, घोर पापाचार की दुनिया कलियुग को भी चाहे वो या न चाहे, सतयुग में परिवर्तन होना ही है। पूर्व में परिवर्तन के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। आज चारो ओर मनुष्य की मनोवृत्ति अति की ओर जा रही है। कोई भी चीज़ जब अपने अति की ओर जाती है तो अति की निशानी है उसका अंत और अंत ही निशानी है नये प्रारंभ की। क्योंकि ये चक्र है। इसीलिए सारे लक्षण स्पष्ट कर रहे हैं कि किस प्रकार इस संसार का परिवर्तन होता जा रहा है। मनुष्यात्माओं में भी उनकी मनोवृत्तियों में भी परिवर्तन कितना तीव्र गति से हो रहा है। आज विदेशों में देखो तो छोटे-छोटे बच्चों की भी मानसिकता में कितनी विकृति आ गयी है। तो ये दर्शाता है कि कलियुग अब अपनी अति में पहुंच चुका है। जब भी कोई स्थिति की अति हो जाती है, तो अति की निशानी है अंत। अंत निशानी है, नयी शुरूआत की। तो समय परिवर्तन बहुत तीव्र गति से हो रहा है।

- क्रमश:

आओ जुड़ें इस भागीरथी...

- पेज 2 का शेष

चाहते हैं कि अगर हम आज सारी समस्याओं की जड़ में जाएं तो पता चलता है कि मनुष्य के मन में आई अपवित्रता ही समस्याओं का मूल कारण है। अब मनुष्य के मन को पवित्र बनाने का भगीरथ कार्य सिवाए परमात्मा शिव के और कोई कर नहीं सकता। शिव का अर्थ ही है कल्याणकारी। तो ये बेहद का कल्याणकारी कार्य उनके सृष्टि पर आगमन से ही संभव होता है। हम आपको ये खुशखबरी सुनाते हैं कि ब्रह्माकुमारी संस्थान 81वीं शिव जयन्ति मना रहा है। अर्थात् शिव परमात्मा के इस धरती पर आकर श्रेष्ठ कार्य करते हुए अस्सी वर्ष पूरे हुए। इन अस्सी वर्षों में लाखों आत्माओं ने परमात्मा के श्रीमत अनुसार अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाया और सभी आत्माओं के लिए भी श्रेष्ठ जीवन जीने के आदर्श बने। तो आओ, आप भी परमात्मा शिव से मिलन मनाकर अपना जीवन सुख शांति से भरपूर करो और उस परमानंद की अनुभूति करो। अब नहीं तो कब नहीं...।

गया-ए.पी. कॉलोनी(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ के बिज़नेस विंग द्वारा आयोजित 'सक्सेस इन बिज़नेस एंड इंडस्ट्री बाई स्पीरिच्युअलिटी' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. रुक्मणि,मा.आबू., ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. सुनीता व अन्य।

जयपुर-वनीपार्क। मानसिंह होटल में ओ.एन.जी.सी. वुमेन ऑफिसर्स कॉन्फ्रेन्स में 'पीस एंड हैप्पीनेस' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. लक्ष्मी तथा ब्र.कु. अनामिका।

ख्यालों के आईने में...

ज़िन्दगी जीने के दो तरीके होते हैं,
पहला : जो पसंद है उसे हासिल करना सीख लो।
दूसरा : जो हासिल है उसे पसंद करना सीख लो।

जीवन में कभी समझौता करना पड़े तो कोई बड़ी बात नहीं है,
झुकता वही है जिसमें जान होती है, अकड़ तो मुर्दे की पहचान होती है।

मनुष्य सुबह से शाम तक काम करके उतना नहीं थकता,
जितना क्रोध और चिंता से एक क्षण में थक जाता है।

शिव अवतरण

ओम शान्ति मीडिया | **महाशिवरात्रि विशेषांक** | **माउण्ट आबू**

शिव अवतरण फिर सृष्टि चक्र में..!

समय की गति इतनी तीव्र है कि उसे पहचानने के लिए हमें समयातीत होना पड़ता है। सभी कहते हैं कि समय आने पर हम खुद समझ जायेंगे अर्थात् संभल जायेंगे। लेकिन उस समय... तो समय आपसे आगे होगा, ना कि आप। ऐसे समय की पहचान देने स्वयं परमात्मा का आना हमारे लिए बहुत सुखद और सुकून भरा है। परमात्मा कहते हैं, आप दूसरों के अनुभवों से सीखो कि समय चक्र कैसा चल रहा है! क्या ऐसे समय में सुख शांति, पवित्रता अनुभव होगी! लेकिन आज अज्ञान अंधकार के कारण हर घर में कलह-क्लेष की प्रधानता हो गई और मनुष्य असंयमित जीवन व्यतीत करने लगा। ऐसे समय में परमात्मा शिव सुख, शांति, सम्पत्ति से भरपूर जीवन देने के लिए अवतरित हो चुके हैं। काल चक्र के इस समय पर सृष्टि को अज्ञान रूपी अंधकार से निकालने हेतु एक सुंदर घटना घटित होती है, जिसे हम शिवरात्रि या शिवजयन्ति के रूप में मनाते हैं।

जैसे घड़ी की सुई शून्य से आरंभ होकर पुन: बारह के आँकड़े को छूती है, इसके बीच जैसे दिन आरंभ होता है, तो आरंभ के समय को हम प्रभात, सुबह या मॉर्निंग कहते हैं। इसके बाद दोपहर का समय, आफ्टरनून का समय होता है, फिर संध्या का समय। इन सभी को हम चार प्रहर में बांटते हैं, जिससे एक दिन का चक्र पूरा होता है।

दिन तो एक ही है, लेकिन आरंभ को हमने सुबह कहा, उसके बाद के समय को दोपहर, उसके बाद संध्या कहा। ठीक वैसे ही सृष्टि के कालचक्र में भी चार प्रहर की पुनरावृत्ति होती है। आरंभ का समय अर्थात् सुनहरी सुबह, जहाँ सुख, शांति सम्पत्ति, समृद्धि से भरपूर सम्पन्नता थी जिसको हम स्वर्णिम युग या सतयुग भी कहते हैं। वहाँ मानव और प्रकृति में सतोप्रधानता का वर्चस्व था।

इस काल से थोड़ा आगे बढ़े तो जो समय आया, उसे सतो सामान्य युग अर्थात जिसे हम त्रेतायुग कहते हैं। इन दोनों कालखण्डों में मनुष्य जीवन में प्रेम, सुख, शांति, समृद्धि थी। सारे तत्व भी प्रचुर मात्रा में सात्विक और सुखदायी थे।

उसके बाद कालांतर में मध्य के बाद जिसे दोपहर या आफ्टरनून कहते हैं, उसमें मानव को सुख, शांति की कमी का एहसास होने लगा। इस समय से हमने सृष्टि में भक्तिमार्ग की छवि देखी। इस काल में मानव परमात्मा का आह्वान करने लगा, उनसे मांगने लगा, याचनाएं करने लगा। उस समय काल को हम ताम्बे का युग या द्वापरयुग कहते हैं।

फिर संध्या का समय आया जहाँ सूर्यास्त हुआ। तब रोशनी के अभाव में हम अंधकार महसूस करने लगे। इस ज्ञान अंधकार के कारण हर घर में कलह-क्लेष की प्रधानता हो गई, मनुष्य असंयमित जीवन व्यतीत करने लगा। इस काल में हमारी घड़ी की सूई चक्र लगाकर बारह तक पहुँचने लगी। काल चक्र के इसी समय पर सृष्टि को अज्ञान रूपी अंधकार से निकालने हेतु एक सुंदर घटना घटित होती है, जिसे आज भी हम शिवरात्रि या शिवजयन्ति के रूप में मनाते हैं। मनुष्य आत्मा के मन में ज्ञान की रोशनी भरने के लिए पुन: इस धरा पर परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है। जैसे कि कई शास्त्रों में वर्णित है, और गीता में ये उल्लेख आता है कि 'यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत... अर्थात् परमात्मा कहते हैं कि जब जब इस सृष्टि पर धर्म की अति ग्लानि होती है, तब पुन: मैं इस धरा पर देवत्व स्थापित करने के लिए, मनुष्य मन को ज्ञान की रोशनी प्रदान कर उसे रूपांतरित कर देवतुल्य बनाने आता हूँ।

आज का परिदृश्य

यदि हम आज के परिदृश्य को देखें तो लगता है कि यही समय परमात्मा के इस धरा पर अवतरित होने का उचित समय है, जहाँ चारो ओर मनुष्य अज्ञान अंधकार के भंवर में गोता खाते दिखाई देता है, उसे कुछ नहीं सूंझता कि क्या करें और क्या ना करें! क्या सही है और क्या गलत! तभी तो हम परमात्मा को याद करते हैं, उसे ढूंढते हैं और उसे पुकारते भी हैं। लेकिन हमें ना तो उनकी सही पहचान है और ना ही हम उनको समझ सकते हैं, **क्योंकि वे तो निराकार हैं ना! वह कैसे आएगा, कब आएगा और किस तरह से हमें दु:ख दर्द से मुक्ति दिलायेगा! इस बारे में हमें मालूम ही नहीं। हमने सुना है, शास्त्रों में पढ़ा है, धर्मात्माओं एवं पैगम्बरों ने हमें उसके बारे में संकेत दिया, फिर भी परमात्मा से हमारा सम्बन्ध तो जुड़ नहीं पाया और ना ही हम उसे पहचान पाये और न ही मिल पाये।**

क्योंकि पहचानें भी कैसे, क्योंकि जैसे कोई छोटा बच्चा जन्मते ही अपने माता-पिता से बिछुड़ जाए, तो बड़े होने के बाद वो कैसे जान या पहचान पायेगा कि मेरा पिता कौन है। जब स्वयं पिता ही उसको बताये कि तुम मेरे बच्चे हो, तभी तो वो उन्हें पहचानेगा भी और उनसे सम्बन्ध भी जुटेगा और उनके वर्से का अधिकारी भी बनेगा। ठीक वैसे ही हम आत्माएँ भी जन्म-जन्मांतर से अपने पिता परमात्मा शिव से बिछुड़ गये और उन्हें भूल गये। हम जाने-अनजाने उसको याद भी करते रहे, फिर भी हम उसे पहचान न सके। वे स्वयं अवतरित होकर अब जब हमारा और अपना परिचय तथा अपने सम्बन्ध का ज्ञान दे, तभी तो हम उसे पहचान सकेंगे।

हमें आपको ये बताते हुए अति हर्ष हो रहा है कि वो महान समय अभी इस काल चक्र के अंदर पहुँच चुका है, जहाँ परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण इस धरा पर होता है, और वे हम सबको इन कठिनाइयों एवं मुश्किलातों भरे जीवन से मुक्ति दिलाते हैं एवं कैसे अपने जीवन में सुख शांति एवं खुशहाली हो, उसकी सहज राह भी बताते हैं।

इस महान पर्व शिवरात्रि के अवसर पर हम आपको भी कहते हैं कि आइए, और परमात्मा से अपना सुख, शांति, प्रेम, समृद्धि का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त कीजिए। यहीं परमात्मा के साथ मिलन करें और अपने भाग्य की तकदीर को जगाएं।

शुभकामना संदेश

सर्व के अति प्यारे पिता परमात्मा जो सर्व के कल्याणकारी हैं, उनका सभी आत्माओं के प्रति शुभ चिंतन और संदेश है, कि हे बच्चों! आप सभी को अब समय को नज़दीक से पहचानने की ज़रूरत है, जहाँ आये दिन रोज़ नयी चुनौतियाँ हमारे सामने होती हैं। आज समाज की दशा और दिशा दोनों दयनीय है। ऐसे में वे कहते हैं कि आपकी स्थिति जब श्रेष्ठ होगी, तो समाज तो अच्छा होगा ही होगा। इसी पुण्य कर्म को वो शिव कल्याणकारी पिता परमात्मा इस धरा पर अवतरित हो कर रहे हैं। इन पलों को अनुभव करने और कराने, सबको अपने पिता के शुभ आगमन का संदेश पहुँचाने का यह उचित समय है। ताकि हर आत्मा अपने पिता से सुख शांति का वर्सा प्राप्त करे और खुश होकर जीवन जिये और दूसरों के भी सुखी जीवन की कामना करे। इन्हीं शुभ आशाओं के साथ शिवरात्रि की आप सभी को कोटि-कोटि बधाई।- **ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी।**

परम शक्ति से जुड़ने से होगा बदलाव

परम शक्ति से योग हमें सब कुछ देगा, हमें स्वयं को बदलने की ताकत भी प्रदान करेगा। हर असंभव कार्य संभव भी हो जायेगा। बस ज्ञान और अनुभव को बढ़ाने के लिए अपनी सत्य पहचान और परमात्मा की सत्य पहचान कर उससे सम्बन्ध जोड़ हमें आगे बढ़ना है। इसके लिए अपनी इंद्रियों पर संयम की भी आवश्यकता है, जिससे हम सम्पूर्ण प्रकृति पर नियंत्रण कर सकें। बस स्वयं को हर पल, हर क्षण जागृत रखने की आवश्यकता है। इस शरीर रूपी साधन को मज़बूत बनाना है, जो नियम और संयम से ही संभव है। राजयोग एक ऐसा माध्यम है जिससे हमारे तन, मन दोनों निरोगी रह सकते हैं, और हम नर से नारायण भी बन सकते हैं। - **भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी।**

जिन्हें पूजा, उन्हीं से होगा मिलन...

आपको अब कर्मकाण्ड करने, कहीं से फूल चुनने, कहीं लोटी चढ़ाने आदि की मेहनत की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। क्योंकि जिसे खुश करने के लिए आप ये सब कर रहे हैं, वो इस धरा पर आपके सामने है। कहते हैं, ना मैं मंत्र से, ना तप से, पूजा-पाठ से प्राप्त होता, मैं तो भाव और भावना से बुद्धि रूपी नेत्र के खुल जाने के बाद प्राप्त होता हूँ। बस! देर किस बात की, आप भी इस पथ पर अग्रसर हो जाओ तो ही अच्छा...!

मैं रोज़ उनपर दूध की लोटी चढ़ाता हूँ। मैं रोज़ पूजा-पाठ करता हूँ, ध्यान भी लगाता हूँ, और मैंने चारो धामों की यात्रा भी की, कथा भी करता हूँ, फिर भी मुझे जो चाहिए, वो संतुष्टता मुझे अपने जीवन में अनुभव नहीं होती। कहीं न कहीं ऐसा लगता कि मैं जो कर रहा हूँ, उसका सीधा तारतम्य मेरे जीवन के साथ नहीं जुड़ पा रहा है। मन में कभी-कभी विचार आता कि जिसको मैं पूजता हूँ, याद करता हूँ और खोजता हूँ, क्या मेरी कभी उनसे मुलाकात भी होगी! क्या मैं कभी उनसे बात भी कर सकूंगा! क्या मैं अपने दिल की बात उनसे कर अपने जीवन में सुकून महसूस कर सकूंगा! मेरी दिली इच्छा है कि मेरे जीवन में सुख, शांति, प्रेम, आनंद और समृद्धि सदा प्रचुर मात्रा में बनी रहे। क्या ऐसा भी कभी समय आयेगा!

मैंने शास्त्रों एवं पुराणों में भी पढ़ा कि परमात्मा का अवतरण होता है, और वो परकाया प्रवेश कर फिर से भक्ति का फल देने इस सृष्टि पर आते हैं। भक्ति का फल 'ज्ञान', अर्थात् समझ देते हैं कि तुझे जीवन मिला ही है खुशियों से जीने के लिए।

अब वे न सिर्फ अपना परिचय देते हैं, बल्कि स्वयं हमारा भी सही परिचय हमें देते हैं। साथ ही साथ हमारा और उनके बीच का सम्बन्ध क्या है, ये भी बताते हैं। जैसे कि हमारा और उनका सम्बन्ध पिता और पुत्र का ही होगा ना! भक्ति में हम गाते ही रहते हैं, 'त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव...' लेकिन सम्बन्ध की पहचान न होने के कारण उनसे हम रूबरू हो नहीं पाते थे। अब वो कहता है, तुम जाने-अनजाने मुझे याद भी करते थे और पूजते भी थे। अब मैं आया हूँ, अब मुझे तथा स्वयं को वास्तविक स्वरूप में जान और पहचान कर मुझे याद करो। तुम सिर्फ पूजते ही न रहो, बल्कि मैं तो तुम्हें पूजनीय बनाने आया हूँ। तुम तो मास्टर हो ना! पिता ज्ञान के सागर, सुख के सागर, शांति के सागर, सर्वशक्तिवान, प्रेम के सागर तथा खुशियों का भंडार हैं, तो भला उनका पुत्र, उनके बच्चे कैसे अशांत हो सकते हैं, कैसे अपने पिता के प्यार से वंचित रह सकते हैं!

अब ये बात हमें समझनी होगी कि अगर किसी बड़े धनवान व्यक्ति का नाम श्यामलाल हो, और हमें उन जैसे धनवान बनना हो, तो क्या हम उसकी माला जपकर या उसकी तस्वीर की पूजा कर हम वो धन प्राप्त कर सकेंगे! नहीं ना। तो उसी तरह हमें अगर परमात्मा से मिलन मनाना है, तो सिर्फ पूजा ही नहीं, बल्कि पूज्य धनवान बनना है, तो पूज्य स्वरूप, देवत्व को अपने जीवन में धारण करना होगा। तभी तो हमारा जीवन महान होगा, ना कि सिर्फ परमात्मा को पूजने से। परमात्मा तो यही चाहता है कि मेरा बच्चा भी मेरे समान कल्याणकारी हो। जिन्हें आज तक हम पूजते आये, उन्हें सही अर्थों में जानें, उनके कर्त्तव्यों को पहचानें और उनके अवतरण के समय को भी समझें। ना सिर्फ उन्हें पूजें, बल्कि उनके बताये हुए कल्याणकारी कर्त्तव्य को भी करें। जो स्वयं के लिए भी और दूसरों के लिए भी हितकर हो।

पुराणों ने भी माना अवतरण

अगर हम शास्त्रों में लिखी बातों को भी देखें, तो शिव पुराण में लिखा है कि, भगवान शिव ने कहा - **''मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट होऊंगा।'' आगे लिखा है कि - ''इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट हुए और उनका नाम 'रूद्र' हुआ।''**

शिव पुराण में यह भी लिखा है कि ''जब ब्रह्मा जी द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ, और इस कारण वह निरुत्साहित थे, तब शिव ने ब्रह्मा जी की काया में प्रवेश किया, ब्रह्मा जी को पुनर्जीवित किया और उनके मुख द्वारा सृष्टि रची।'' शिव पुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उस द्वारा सतयुगी सृष्टि को भी रचा। इस पौराणिक उलल्लेख का भी यह भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मस्तिष्क (ललाट) में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्होंने संसार का कल्याण किया। महाभारत में लिखा है कि भगवान ने ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर ज्ञान दिया और सतयुग की पुन: स्थापना की।

''श्रीमद्भगवद्गीता में भी लिखा है कि मैंने पहले यह ज्ञान विवस्वान को दिया था।'' सोचने की बात है कि सृष्टि के आदि में वह आदिम वक्ता कौन था? सिखाया था। स्पष्ट है कि तब ज्योतिस्वरूप परमात्मा द्वारा ही यह ज्ञान दिया होगा। इसलिए ही भारत में प्राय: सभी प्राचीन धर्म-ग्रन्थों में ज्ञान के उद्गम के साथ ब्रह्मा और शिव ही का नाम जुड़ा हुआ है।

ब्रह्मा ही को तो 'आदिदेव' और शिव ही को तो 'स्वयंभू अथवा 'आदिनाथ' कहा गया है। ध्यान देने की बात है कि आद्य शंकराचार्य ने भी अपने भाष्य में इस श्लोक की व्याख्या करते हुए कहा है कि भगवान ने नई सृष्टि रचने के समय (सर्ग) ही यह ज्ञान दिया था और योग

''महाभारत में भी लिखा है कि भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया। परंतु चूंकि बाद में वैष्णवों ने महाभारत को वैष्णव ग्रन्थ बनाने के यत्न किये, इसलिए उन्होंने लिख दिया कि नारायण ने ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया।'' परंतु इसी श्लोक में जो 'प्रभुख्यय:' शब्द है, वो ही इस बात को सिद्ध करता है कि ज्योतिस्वरूप, अविनाशी परमात्मा ही के प्रवेश होने के बारे में कहा गया है। नारायण तो स्वयं ही विवस्वान थे, अर्थात् सूर्यवंशी थे। गीता-ज्ञान जानने वालों में ब्रह्मा ही को भागवत् आदि ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। तब अवश्य ही ब्रह्मा को परमात्मा ही ने यह ज्ञान दिया होगा और उसे माध्यम बनाकर अन्य आत्माओं को भी गीता ज्ञान सुनाया होगा।

तो आज संसार के परिदृश्य पर अगर हम दृष्टिपात करें, सोचें और विचार करें तो उस निष्कर्ष बिन्दु पर अवश्य पहुँचेंगे कि आज वही अज्ञान अंधकार रूपी बादल संसार में छाये हुए हैं। इसी से निकालने के लिए परमात्मा शिव का अवतरण इस धरा पर होता है। जिसके यादगार रूप में हम शिवरात्रि का उत्सव मनाते हैं। तो आयें, अब हम उनसे मिलन मनायें और अज्ञान अंधकार के भटकन तथा हर दु:ख-दर्द से मुक्ति पायें। यही समय है। अभी नहीं तो कभी नहीं।

इन अध्यात्म प्रेमियों का जीवन कुछ नया करने हेतु

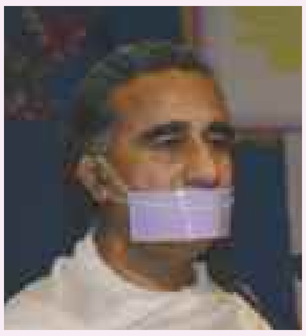

ब्रह्माकुमारी संस्था के संदेश को पूरे विश्व में जाना चाहिए। यहाँ से जो धारा बहेगी, जो तरंगें जाएंगी, ज़रूर जन-जन को आप्लावित करेंगी, शांति प्रदान करेंगी तथा आनंद से सराबोर करेंगी। यहाँ अलौकिकता है, आत्म-भाव है, मैत्री भाव है। ना तो कोई सूक्ष्म हिंसा ना स्थूल। यहाँ भेद नज़र नहीं आता, सब अभेद है। जिनके अंदर समर्पण भाव होगा वही ब्रह्माकुमारी संस्था में आ सकते हैं। यही मेरा अनुभव है कि मुझे लगता है कि ब्रह्माण्ड में कुछ विशेष घटित होना है, बस थोड़ा समय बाकी रहा हुआ है कि जब इन अध्यात्म प्रेमियों का जीवन बनेगा प्रेरणा श्रेष्ठ समाज के निर्माण के लिए। जैसे गोवर्धन पर्वत उठाने के लिए सबने अपनी अंगुली दी। वह अंगुली है इस अभियान में एक संकल्प में बंधने की। **-जैन मुनि अरविन्द कुमार,राजपुरा,पटियाला।**

FOR PEACE & HAPPINESS, WATCH 'PEACE OF MIND CHANNEL, TATA SKY-1065, VIDEOCON-497, AIRTEL-678, RELIANCE-171

समानता से होता परमात्म मिलन...

मेला तो सबने देखा ही होगा, लेकिन ऐसा विहंगम मेले का दृश्य देखने के बाद, जो सुकून मिलता है, जो मन गद्‌गद्‌ होता, वैसा परिदृश्य आज तक हमारे सामने नहीं आ पाया। मन तड़प जाता है, जब मनाने वाला, सुकून देने वाला, जाने वाला होता है। उसे बस देखते रहने का भाव सामने रखते हुए हम चाहते हैं, वो यहीं रह जाये, उसे देखते हुए कर्म करते रहें। अभी तक हमारी नज़रें पूरी तरह से पवित्र हो गई हैं और आने वाले समय में बहुतों की होंगी, ऐसी आशा हम सभी के प्रति रखते हैं। उसे देखकर, उसे आँखों से छूकर, बस चित्त में वही रहे, वही रहे, वही रहे... ये दृश्य सिर्फ अरावली श्रृंखला में स्थित आबू पर्वत पर ही देखने को मिलता है।

'हमने देखा, हमने पाया शिव भोला भगवान...', ये बात कइयों के लिए कल्पनाओं से परे होंगी। परंतु हमने यह हकीकत में देखा परमात्मा से मिलन मनाते हुए लाखों आत्माओं को। ये आपके लिए आश्चर्य तो होगा ही, लेकिन हमने ये देखा अपनी नज़रों से। अब वे कैसे मना रहे थे मिलन, ये तो एक अनोखी ही विधि है। क्योंकि परमात्मा निराकार है, और निराकार परमात्मा से मिलन मनाना, अर्थात् उन जैसा हमें भी निराकार होना पड़े। क्योंकि कहा जाता है कि समानता से मिलन होता है। जैसे कहा जाता है, 'जैसा बाप वैसा बेटा', तो हमारे पिता परमात्मा शिव का रूप ज्योतिर्बिन्दु निराकार, तो हमारा भी रूप ज्योतिस्वरूप ही होगा ना! ज्योत से ज्योत जलेगी ना! और अज्ञान अंधियारा मिटेगा। जब किसी का बच्चा विदेश में पढ़ता है, तो उसके पिता को जब अपने बच्चे से मिलना होता है तो वो किस चीज़ का सहारा लेता है, वायरलेस कनेक्शन या 'बेतार का तार'। इसका मतलब है कि किसी से भी अगर हमको स्थूल में भी बात करनी हो तो उसके लिए भी हमें थोड़ा सूक्ष्म बनना पड़ता है। वैसे ही यदि परमात्मा से मिलन मनाना है या सम्बन्ध जोड़ना है तो, हमें भी अपने मन के तार को उसके साथ जोड़ना होगा।

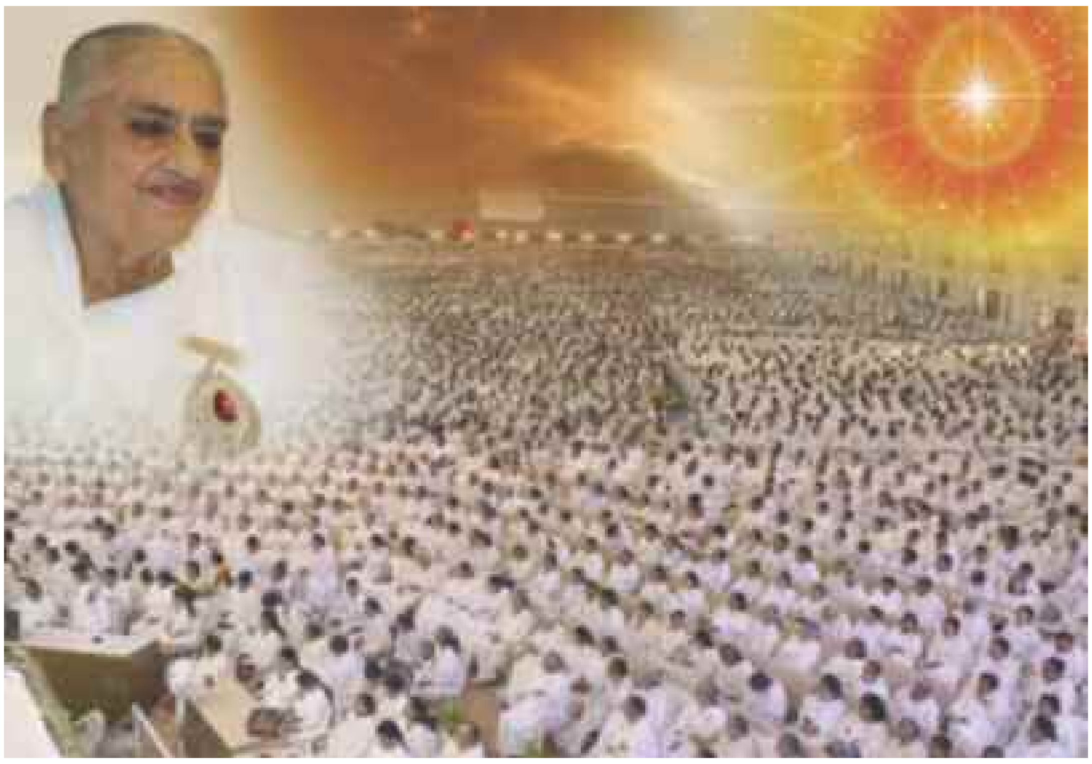

वास्तव में देखा जाए तो मनुष्य का सीधा तारतम्य 'मन' से है। मन ही तो मिलन मनायेगा ना! ऐसा ही सुंदर मिलन हमने देखा भी, मनाया भी, और मनाते हुए अनेक जिज्ञासुओं को देखा। इस मिलन में और कुछ नहीं, सिर्फ मन और दिल से ही ये मिलन मनाया जाता है। जब मन को वास्तव में जो चाहिए था वो मिल जाता, तब वो सुकून महसूस करता है, और खुशियों में झूम उठता है। तब गीत गाने लगता, 'पाना था सो पा लिया, अब ना रहा कुछ बाकी...' ये हमने अपनी आँखों से देखा व सुकून पाया। ये ऐसा सुंदर अलौकिक मिलन इस धरा पर हो रहा है। तो आपका मन उनके मिलन के लिये लालायित नहीं है! आखिर वो आपका भी तो पिता है ना! जिसे पाने के लिए ही तो आप उसे पूजते रहे, पुकारते रहे, पहाड़ों-कन्दराओं में ढूंढ़ते रहे। तो आइये, आपको हम बताते हैं उनकी मिलन भूमि के बारे में। ऐसे सुंदर मिलन की धरनी आबू अरावली पर्वत है, जहाँ उस अलौकिक मिलन की महफिल लगती रहती है। तो अब देर किस बात की! आयें और इस महफिल में शामिल हो जायें और अपने उस प्राण प्राणेश्वर के सच्चे आशिक बनकर उसको अपने दिल में बसा लें और उससे मिलन का आनंद लें।

सत्यम् शिवम् सुंदरम् का गीत बज रहा चहुँ ओर

जब कोई अपना अरसों से बिछड़ा हुआ साथी हमसे मिलने आता है, तो हम खुशी से फूले नहीं समाते! राह में उसके लिए अरमानों के पुष्प लिए बैठे होते। वैसी ही कुछ स्थिति उस परम् प्रियतम् की भी है, जो अपनी सारी खुशियाँ बांटने हमारे दर पर खड़ा है। बस थोड़े अलसाए नैनों को खोल कर उसे देखो - आप भी अपने को जीवंत अनुभव करेंगे। तो जागो और पहचानो उस परम प्रियतम् को ।

सत्यम् शिवम् सुंदरम् का गीत सभी बड़े चाव से गाते हैं। उस गीत की लाइन आते ही मन में प्रसन्नता की एक लहर दौड़ जाती है। प्रसन्न हों भी क्यों ना! क्योंकि हमारे मन का तार और अंतर्रात्मा की चाह उस सत्यम् शिवम् सुंदरम् परमात्मा पर एकाग्र होने से खुशी एवं सुकून का अनुभव होने लगता है। न जाने हमने खुशियाँ प्राप्त करने के लिए जीवन में कितने हथकंडे अपनाए हैं कि कहीं खुशी की झलक हमारे जीवन में मिल जाए। लेकिन आज इस शिव जयन्ति के अवसर पर आपको खुशियों की प्राप्ति कराने हेतु विधि बताते हुए हमें अति हर्ष हो रहा है कि स्वयं खुशियों का दाता, वो प्राणेश्वर, परमेश्वर, परमपिता हमारी खाली झोली को खुशियों से भरने की राह दिखा रहे हैं। हमें तो अक्ल भी नहीं थी कि खुशियाँ कैसे मिलेंगी! क्योंकि हम तो दर-दर भटकते रहे, तेरे मेरे में, वस्तु-वैभव, पदार्थों में खुशी ढूढ़ने की कोशिश की। लेकिन जितना ढूंढ़ा उतने ही दूर होते गए। जबकि अब परमात्मा शिव ने आकर ये बताया कि हे मेरे लाडले बच्चों! खुशियाँ तो आपके पास ही हैं, लेकिन उसको कैसे अर्जित करना है, ये मैं आपको बताता हूँ। सिर्फ आप अपने आपको देखो, आपका और मेरा नाता कैसा है! कहेंगे ना, पिता और पुत्र का। तब भला आप कैसे नाखुश रह सकते हैं! बस, इतना ही करना है, मुझसे सम्बन्ध जोड़ो और अपनी वास्तविकता में स्थिर हो जाओ। देखो, आप कौन हो, किसके हो, और हमारा जो ये सम्बंध है, ये तो खुशियों भरा ही है ना! मैं खुशियों का भंडार, और मेरे बच्चे उससे कैसे वंचित रह सकते हैं! जो मेरी जायदाद सो आपकी जायदाद, तब भला आप इस खुशी से कैसे दूर रह सकते हैं! आओ, शिवरात्रि के इस शुभ अवसर पर अज्ञान अंधकार के बादल को हटाएं और अपने आप से भी प्यार करें, अपनी शक्तियों को पहचानें और मुझ शक्तियों के सागर के साथ नाता जोड़ खुशियों के झूले में झूलें। यही तो सच्चे अर्थ में शिवरात्रि मनाना है। तो ऐसी शिवरात्रि मनाकर अपनी झोली खुशियों से भरेंगे ना! आप ही तो गाते थे ना 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्', तो उस गीत के भावार्थ को सार्थक करेंगे ना!

तो आओ बढ़ायें एक कदम शिव पिता की ओर।

तब दिखेगी जीवन में एक स्वर्णिम सुनहरी भोर।।

सभी के दिल का एक प्रारूप, हमारा परमात्मा 'ज्योति स्वरूप'

परमात्मा के स्वरूप को लेकर सभी एकमत ही रहे हैं। लेकिन उसके स्वरूप को बताने का तरीका सबका अलग-अलग रहा। जितनी भी महान आत्माएँ, पीर, पैगम्बरों ने परमात्मा के स्वरूप को बताया, उसमें कहीं न कहीं निराकार का भाव अवश्य छुपा हुआ था। इसमें मुख्य बात हमें ये समझनी है कि परमात्मा कोई देहधारी मनुष्य हो नहीं सकता, वो होगा तो देहातीत ही। उसके स्वरूप का वर्णन प्रमुख पैगम्बरों ने जो किया, वो निम्नवत है...

ईसा के भाव में 'दिव्य ज्योति रूप'

जैसे कि ईसा मसीह(जिसस क्राइस्ट) ने गॉड को लाइट कहा है। उन्होंने कहा कि 'गॉड इज़ लाइट, आई एम द सन ऑफ गॉड'। जिसस ने कभी ये नहीं कहा कि 'आई एम गॉड', उसने परमात्मा को लाइट के स्वरूप में ही बताया।

ज्योति 'जेहोवा' का हुआ साक्षात्कार

ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया गया है कि जब हज़रत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहाँ पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ, जिसको देखते ही हज़रत मूसा ने कहा 'जेहोवा'। उस तेज को नाम दिया जेहोवा और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ड टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं, का प्रतीक है।

सिक्ख धर्म ने माना निराकार को

इसी प्रकार सिक्खों के धर्म स्थापक गुरु नानक जी ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है। जबकि ज्योति स्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मंदिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। गुरू गोविंद सिंह जी के 'दे शिवा वर मोहे' शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं, बल्कि विश्व के पूज्य हैं।

'होली फायर' में भी निराकार

पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहाँ पर होली फायर मिलता है। कहा जाता है कि पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि यह अखण्ड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है, तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर वहाँ स्थापित करते हैं।

रहस्य गिरजाघर का

रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते थे। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरजा शब्द गिरिजा से बना है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के प्रति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

श्रीकृष्ण के भी पूज्य निराकार शिव

इसी तरह महाभारत के युद्ध के पहले विजय हेतु कुरूक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता निराकार शिव की पूजा-अर्चना की, तथा साथ-साथ श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई व युद्ध में कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की।

'संग-ए-असवद्' के रूप में माना

मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी शिवलिंग के आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सम्मान से चूमते हैं। उसे वे 'संग-ए-असवद्' कहते हैं। परंतु वे भी इस रहस्य को नहीं जानते हैं कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है। उसको वे लोग 'नूर-ए-इलाही' भी कहते हैं।

जापान, चीन, बेबीलोन भी निराकार का समर्थक

जापान में शिवोनिज़म सेक्ट वाले तीन फीट की ऊँचाई पर और तीन फीट दूर बैठकर एक थाली में रखे लाल पत्थर पर ध्यान लगाते हैं और इस पवित्र पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' भी कहते हैं। उसका नाम दिया है 'चिंकोनसेकी' जिसका अर्थ शान्ति का दाता है और वे उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। मिस्र में भी सेवा नाम से पूजा होती थी। फिजी देश के निवासी शिव को 'सेवा' या 'सेवाजिया' के नाम से पूजते हैं।

श्रीराम ने भी पूजा 'शिव' को

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम् की पूजा करने की क्यों आवश्यकता होती? ये भी कहा जाता है कि किसी भी कार्य की शुरुआत करने से पहले परमात्मा शिव का स्मरण अति आवश्यक है, ऐसा ही श्रीराम ने भी किया।

परमात्मा द्वारा परिवर्तन का प्रमाण यहाँ

मानवता व दिव्यता का प्रत्यक्ष रूप

जिस प्रकार की यहाँ पवित्रता, प्रेम, मानवता तथा दिव्यता है, ऐसी हर घर में हो। मैं दादीजी सहित अनेक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों से मिला, उनमें एक अनोखी अलौकिकता का अनुभव हुआ। शास्त्रों में जिन विकार रहित योगियों का वर्णन है वह इन सभी आत्माओं द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है। मैं चाहूंगा कि हर घर में इनके जैसा ही स्वरूप हो, हर घर में ब्रह्माकुमारियों का ओजस हो। - **एच.एच. श्री स्वामी अध्यात्मनंद जी महाराज, अध्यक्ष, शिवानंद आश्रम, अहमदाबाद।**

परम शांति का केन्द्र है आबू

दुनिया भर में शांति का फैलाव करने वाली यदि कोई संस्था है तो वो यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही है। योग के माध्यम से विश्व को शांति प्रदान करने में कोई संस्था यदि यशस्वी पायी गई है तो वो है यह ब्रह्माकुमारी संस्था। पुरूष प्रधान समाज में महिला भी धार्मिक, यौगिक भूमिका निभा सकती है, इसे प्रैक्टिकल कर दिखाने वाली संस्था है ब्रह्माकुमारीज़। विश्व में शांति का प्रसार करने में इस संस्था ने महती भूमिका निभाई है। -**श्री 1008 श्रीशैल जगतगुरू चन्ना सिद्धाराम।**

अल्लाह,खुदा,गॉड का रूप निराकार ज्योति है

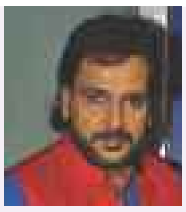

अल्लाह, खुदा, गॉड व भगवान वास्तव में एक ही है। वह निराकार ज्योति है। पवित्र कुरान में एक लाख पैगम्बरों का वर्णन है, जिन्होंने समय-समय पर इस धरा पर अवतरित होकर मानव जाति को यह शिक्षा दी है कि परमात्मा एक है और वह ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है। ब्रह्माकुमारीज़ बहुत ही सरल ढंग से पूरे विश्व को यह शिक्षा दे रही है कि कैसे परमात्मा से अपना सीधा सम्बन्ध जोड़ें तथा उसकी इबादत करें। जिससे मन को शांति व सुकून की अनुभूति हो। - **शाहबाज़ खान, प्रसिद्ध फिल्म कलाकार,मुम्बई ।**

प्रेम का अद्‌भुत अनुभव

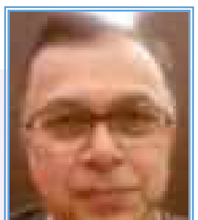

इस ईश्वरीय ज्ञान से हमारा लाइफ के प्रति जो सोचने का नज़रिया होता है वो बिल्कुल ही बदल जाता है। ये एक बिना दवाई के वण्डरफुल ट्रीटमेंट है। मन की ऐसी कई बीमारियां हैं जिनकी कोई दवाई नहीं की जा सकती, लेकिन यहां मेडिटेशन के प्रैक्टिस से तथा परमात्मा की याद से ये बीमारियां पूरी तरह ठीक हो जाती हैं। पहली बार जब मैं बाबा से मिला तो मेरे शरीर के सारे रोंगटे खड़े हो गए थे और आज भी मैं परमात्मा के उस मिलन को भूल नहीं पाता। **-डॉ.एस.पी.लोचड, सीनियर साइंटिस्ट, हेल्थ फिज़िक्स डिपार्टमेंट, न्यूक्लियर साइंस सेंटर,नई दिल्ली ।**

कथा सरिता

असली हीरा

एक बार सम्राट विक्रमादित्य अपने सेनापति और मंत्री के साथ रथ पर सवार होकर कहीं जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने देखा कि सड़क पर धान के दाने बिखरे पड़े हैं। उन्होंने अपने सारथी से कहा - ''सारथी! रथ रोको, यहाँ भूमि हीरों से पटी पड़ी है। ज़रा मुझे हीरे उठाने दो।'' उनके मंत्री ने भूमि की ओर देखा और बोले -''महाराज! संभवतया आपको भ्रम हुआ है। भूमि पर हीरे नहीं, धान के दाने पड़े हुए हैं।''

सम्राट विक्रमादित्य तुरंत रथ से नीचे उतरे और धान के दानों को बटोरकर अपने माथे से लगाने लगे। ऐसा करके उन्होंने मंत्री की ओर देखा और बोले- ''मंत्री जी! आपने पहचानने में भूल की है। असली हीरा तो अन्न ही होता है। अन्न से ही सबका पेट भरता है। इसीलिए अन्न को हमारे ऋषि-मुनियों ने श्रद्धापूर्वक अन्नदेव कहकर सदैव उसका सम्मान करने की प्रेरणा दी है। अत: अन्न के प्रत्येक दाने का आदर करना चाहिए। अन्न का यह दाना किसी हीरे से कम कैसे हो सकता है!''

सम्राट विक्रमादित्य के ऐसा कहने पर अचानक उनके मंत्री को अनुभूति हुई कि जैसे साक्षात् अन्नपूर्णा वहाँ खड़ी होकर सम्राट विक्रमादित्य को आशीर्वाद दे रही हों कि जिस राज्य का राजा अन्न के प्रत्येक दाने का इतना सम्मान करता हो, उस पर उनका सदैव आशीर्वाद रहेगा और वह राज्य सदैव अन्न के अक्षय भंडार से परिपूर्ण रहेगा।

समर्पण

महादेव भाई देसाई, महात्मा गांधी से मिलने के लिए पहुँचे। उस समय वे युवा थे और कुछ नया करने के जोश से भरे हुए थे। उन्होंने गांधी जी से निवेदन किया - ''मैंने आपकी गुजराती भाषण का अंग्रेजी में अनुवाद किया है। कृपया जाँच लें कि यह ठीक है अथवा नहीं। यदि उचित लगे तो मैं आपकी सेवा में रहना चाहूंगा। मुझे अपने साथ कार्य करने का अवसर प्रदान करें।'' गांधी जी ने भाषण पढ़ने से पहले ही महादेव भाई को अपनी स्वीकृति दे दी।

गांधी जी बोले- ''ठीक है! तुम जैसा चाहते हो, वैसा ही होगा। आज से तुम मेरे सचिव पद पर कार्य करोगे।'' महादेव भाई बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उत्साहित होकर पूछा - ''मैं कब से कार्य शुरु करूँ?'' गांधी जी बोले - ''बस अभी से शुरू कर दो।'' इस पर महादेव भाई बोले - ''लेकिन मैं अभी घर से पूछकर नहीं आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि एक बार घर सूचना दे आऊँ।'' तब गांधी जी ने कहा - ''अब तुम घर नहीं जाओ। अपने आप को देश सेवा में अर्पित करने वालों को सब कुछ छोड़ना पड़ता है। अपने अतीत से चिपके रहोगे तो समर्पण कैसे करोगे।''

महादेव भाई गांधी जी का आशय समझ गए। उस दिन से उन्होंने अपना कार्यभार संभाल लिया और पूरी निष्ठा के साथ गांधी जी के दाएं हाथ के रूप में कार्य में जुट गए। वह अंतिम दिन था, जब वे अपने घर गए थे, उसके बाद उन्होंने कभी मुड़कर नहीं देखा। यद्यपि भारतीय स्वाधीनता के इतिहास में उनका नाम प्रमुखता से नहीं आता, तब भी इस महायज्ञ में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही, जो सदा अविस्मरणीय रहेगी।

दृढ़ संकल्प

दस माह की अवस्था में पिता को खो चुके रामकृष्ण बुवा को बचपन से ही गाने का शौक था, लेकिन आर्थिक दुरवस्था उनकी संगीत की शिक्षा में बाधक बन रही थी। संगीत सीखने की लालसा उन्हें ग्वालियर में उस्ताद निसार हुसैन खाँ तक खींच लाई। वे उनसे संगीत सीखने लगे, लेकिन दो वक्त के भोजन की समस्या तो रोज़ ही उत्पन्न हो जाती थी। संगीत से उन्हें ऐसा लगाव था कि वे भीख मांगकर अपना पेट भरते। एक बार खाँ साहब ने उनके फटेहाल वस्त्र देख उनसे कहा - ''यहाँ से चले जाओ, क्यों संगीत सीखने की रट लगा रखी है!'' इस पर रामकृष्ण बुवा बोले - ''मैंने संगीत सीखने का संकल्प लिया है, संगीत सीखे बगैर नहीं जाऊंगा।'' आखिरकार पं. रामकृष्ण बुवा ऐसे श्रेष्ठ गायक बने जिन्होंने कई घरानों की गायकी को मिलाकर अपनी विशिष्ट शैली विकसित की। सच है कि यदि मन में कुछ करने की सच्ची चाह हो तो मार्ग की बाधाएँ दूर होती चली जाती हैं।

माउण्ट आबू-पीस पार्क। राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस 2016 के अवसर पर सामुदायिक रेडियो मधुबन 90.4 एफ.एम. एवं ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित ऊर्जा संरक्षण जागरुकता प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए म्युनिसिपल चेयरमैन सुरेश कलमाड़ी। साथ हैं ब्र.कु. शीलू, ब्र.कु. शम्भूनाथ, ब्र.कु. यशवंत,90.4 एफ.एम. रेडियो तथा अन्य।

नई दिल्ली। इंटरनेशनल ह्युमन राइट्स डे-2016 के अवसर पर इंडिया इस्लामिक सेंटर ऑडिटोरियम में इंटरनेशनल ह्युमन राइट्स अवॉर्ड, 6वें भारतीय मानव अधिकार सम्मान-2016 के दौरान समाज में शांति, एकता तथा मानव अधिकारों की सुरक्षा के लिए अपने अमूल्य योगदानों के लिए 'एम्बेसडर फॉर पीस अवॉर्ड-2016' प्राप्त करते हुए ब्र.कु. बिन्नी।

फतेहावाद-हरियाणा। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष सुभाष बराला को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. सीता। साथ हैं जिला उपायुक्त ए.के. सोलंकी तथा अन्य।

देवघर-वैद्यनाथ(झारखण्ड)। जन जन तक ईश्वरीय संदेश पहुँचाने हेतु निकाली गई प्रभात फेरी का झण्डी दिखाकर शुभारंभ करते हुए वार्ड पार्षद एवं समाजसेवी रीता चौरसीय। साथ हैं ब्र.कु. रीता तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

जयपुर-राज.। 'अलविदा तनाव शिविर' के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पूनम। मंचासीन हैं मध्य में एस.डी. शर्मा,देवस्थान विभाग चेयरमैन, राजेन्द्र शेखावत,रिटा. एडिशनल ए.सी.पी. तथा अन्य।

जालोर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के न्यायिक प्रभाग द्वारा कलेक्ट्रेट में 'न्यायिक सुधार एवं आध्यात्मिक जागृति' विषय पर कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए बी.डी. राठी,रिटा. जस्टिस,एम.पी. हाई कोर्ट। साथ हैं के.सी. नाहर,जिला जज, ब्र.कु. मंजू,ओडिशा, ब्र.कु. रंजू तथा अन्य गणमान्य जन।

लोगों का क्या!

जीवन हमारा है, हमारे लिए है, उसमें रहना भी हमको, जीना भी हमको है, सारी खुशियाँ हमारी ही हैं, लेकिन किन्तु परंतु कहके हम दूसरों की शर्तों पर जीवन जीते हैं। शायद इसीलिए तो दु:खी नहीं हैं ना! हमेशा अच्छा करो तो मुश्किल, ना करो तो और मुश्किल! कर रहे हैं तो कहेंगे आप लगे ही रहते हैं थोड़ा आराम कर लो। आराम करने लगे तो कहेंगे आराम हराम है। फिर क्या किया जाए! सभी हमें अपने जीवन के अनुभवों तथा शर्तों पर जीवन जीने के लिए विवश करते हैं या हम वश होते हैं?

हम आपको अपने अनुभव के आधार से बताना चाहेंगे। कोई भी सिद्धान्त एक दिन में नहीं बनता, उसे बनाने वाले ने दिन-रात मेहनत की होती है, तब कहीं जाकर एक सिद्धान्त का निर्माण होता है। किसी भी खोज में, चाहे विज्ञान, चाहे समाज शास्त्र या दर्शन शास्त्र, सभी के रचनाकारों ने क्या कुछ नहीं किया होगा! इनकी थीम बनाना, फिर ठीक नहीं लगा, तो फिर बनाना, तब जाके कहीं एक छोटा सा टॉपिक तैयार होता है।

लेकिन उस पर फोकस होने के लिए सबसे पहले उन्होंने क्या किया होगा? हमारे हिसाब से एक चीज़ की होगी, वह है, दुनियादारी छोड़ी होगी। उनके पास इन बातों के लिए समय होगा कि दुनिया में क्या हो रहा है? लोग क्या कह रहे हैं, या फिर हमारे घर वाले क्या सोच रहे हैं, आदि आदि।

ये सारी चीज़ें किसी भी क्षेत्र में लागू होती हैं। चाहे वो विज्ञान हो या अध्यात्म, सभी में ये चीज़ें एक समान कार्य करती हैं। कोई भी इतिहास लिखने के लिए सिरफिरा होना पड़ता है। यहाँ सिरफिरा का भाव है कि उस विषय के प्रति दृढ़ता के साथ आगे बढ़ना पड़ता है; खाने, पीने, सोने तक की भी फुर्सत नहीं। ऐसी स्थिति हो, तब जाकर कुछ होगा। हम चाहते हैं हमारा सब ठीक भी हो जाये, और हमें कुछ करना भी ना पड़े। ठीक तो पक्का हो जायेगा, लेकिन उसके लिए, करना तो पड़ेगा! लेकिन जो हमारी मजबूरियाँ हैं ना, वो हमें आगे बढ़ने नहीं दे रही हैं। भगवान ने जब शर्त रखी है कि यदि हम पाँच चीज़ें छोड़ दें तभी जाकर हमें सब कुछ मिलेगा जो हमें चाहिए, और यही हमारी, आपकी दुनियादारी है। भगवान के घर में भी रहते और बाहर भी रहते। यहाँ समर्पित भी होना है, बीच में रिश्ते भी निभाने हैं। भाई! ये शर्त हमारे लिए नहीं है! आप यहाँ रहते हैं और बाहर भी जाते हैं, रिश्ते भी निभाते हैं, तो अपना टाइम वेस्ट कर रहे हैं। यदि ऐसा कर रहे हैं तो। तभी तो हमसे चमत्कार नहीं हो रहे। हम भी लोगों की तरह सब कुछ प्रयोग करते, उन्हीं की तरह रहते, उन्हीं की तरह साधनों, मोबाइल फोन, ईयर फोन, टैब का प्रयोग करते, सब कुछ वैसा ही है। कुछ आपने या हमने नहीं बदला, और सभी यही चाहते हैं कि आप उन्हीं की तरह रहो। लेकिन कुछ अलग करने के लिए अलग तरीके से रहना भी पड़ेगा और उसकी कन्सीसटेन्सी या तारतम्यता भी बनानी पड़ेगी।

दुनिया का उदाहरण लो, किसी को किसी के प्रति आकर्षण हो, तो वो सबकुछ भूलकर अर्थात् दुनियादारी छोड़ उसी के नियम, शर्तों पर जीवन आखिर तक जीता है। उस समय कोई लाख समझाए, वो मानता है, नहीं ना! ये तो हुई दुनिया की बात। अरे वहाँ तो कोई सुरक्षा भी नहीं है, हर समय हम असुरक्षित हैं, है कि नहीं!

वैसे ही परमात्मा से यदि आपका लगाव हो जाये, तो क्या दुनिया, क्या दुनियादारी! और ये पूरे जीवन, जब तक है, तब तक पीछा नहीं छोड़ने वाले! कभी कोई कहता है मेरी माँ बीमार, कोई कहता पिता, किसी के माँ-बाप नहीं तो उसकी फिक्र, कौन हमारे परिवार को पालेगा! तो यहाँ रहने की ज़रूरत नहीं। आप दुनिया में रहो ना! आप जब आध्यात्मिक जीवन अपनाते हो तो क्या यही सोचकर, यहाँ थोड़ा हमें सहारा मिल जायेगा! अरे भगवान तो हमें आत्मनिर्भर बनाना चाहता, और हम हैं कि सहारे छोड़ना ही नहीं चाहते!

इश्क यदि मजबूरी वाला है, तो कब तक चलेगा! परमात्मा हमें सच्चा आशिक बनाना चाहता, उसमें कोई शर्त नहीं, बस प्यार है, बिना शर्त, दिये जाने का भाव है। मजबूरी में किया गया कोई भी कार्य सुखदायी नहीं होगा। आप हमेशा उम्मीदों के सहारे रहेंगे।

अगर किसी एक के साथ आपका सम्बन्ध हो तो आप अपना सौ प्रतिशत (हन्ड्रेड परसेन्ट) दे सकते हैं, ऊर्जा के साथ। लेकिन पूरी दुनिया के साथ आप जुड़ेंगे तो आपकी ऊर्जा वैसे ही बँट जायेगी, न यहाँ के, न वहाँ के।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

आप देखो ना, आध्यात्मिकता आपको दूसरों के शर्तों से निकालने के के लिए ही तो है, जिसमें आपके अंदर इतनी शक्ति भर जाती है कि आप हर समय कुछ लोग हों या ना हों, आप खुश, सुखी व शान्त रह सकते हैं। तभी वह बात जो आज तक आप सुनते आये, वो चरितार्थ होगी।

हाँ निश्चित रूप से जो भी हम और आप कार्य करते हैं, उसमें शर्त ज़रूरी है, लेकिन वह शर्त न्यूट्रल होगी, तब फायदा होगा। तब हम उसे फॉलो भी करेंगे। उसमें मजबूरी नहीं है, सोचने की जगह है, छूट है। यही तो भगवान हमसे करवाना चाहते हैं। उसने शर्त बतायी, वो भी न्यूट्रल तरीके से कि ये सारी समस्याएं इन विकारों की वजह से हैं, ये आप देखो, इन्हें छोड़ो, तभी होगा। फोर्स नहीं है, लेकिन करना तो होगा ना। नहीं तो ना माया मिलेगी ना ही राम...!

उपलब्ध पुस्तकें

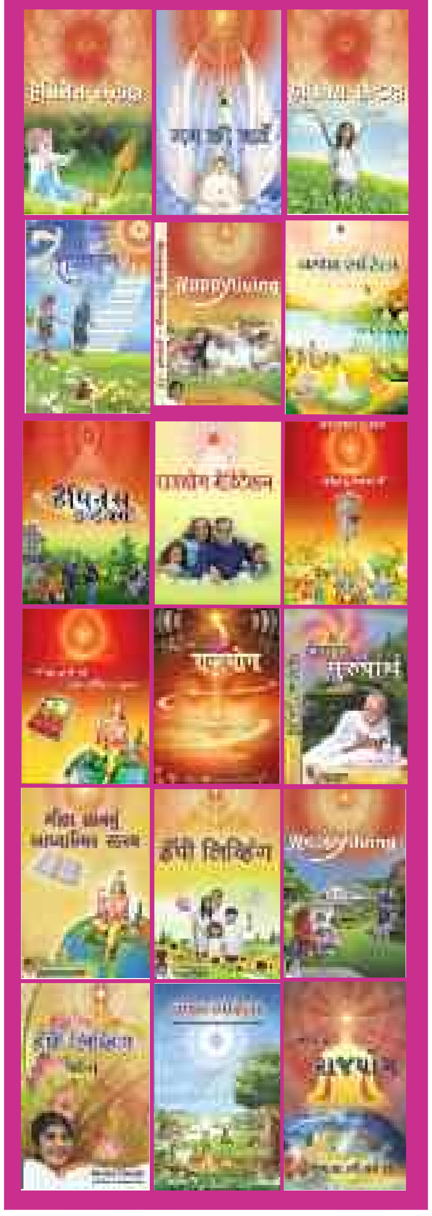

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: मैं एक कुमार हूँ। मैं ये जानना चाहता हूँ कि मैं अपनी पवित्रता को श्रेष्ठ कैसे बनाऊँ ताकि स्वप्न तक भी कोई व्यवधान न रहे?

उत्तर: आत्माओं को पावन बनाने के लिए स्वयं भगवान को आना पड़ता है। वे आकर राजयोग सिखाते हैं जिससे हम सर्वशक्तिवान से शक्तियाँ लेकर इस माया पर विजयी बनते हैं। यदि कोई राजयोग का अभ्यास चार घण्टे प्रतिदिन न करे तो चाहे वो कोई भी हो, उसे काम सताएगा ही। यही कारण है कि सन्यासी भी पवित्रता का सुख नहीं ले पाते।

आप श्रेष्ठ पवित्र बनकर भगवान को मदद करना चाहते हैं, यह सर्वोत्तम पुण्य है। बिना साधना पवित्रता श्रेष्ठ नहीं हो पाएगी, इसलिए राजयोग की साधना के साथ सम्बन्धों में न्यारापन का अभ्यास करें। न्यारे न होने से एक दो के इतने प्यारे बन जाते हैं कि वासना हावी हो जाती है।

अमृतवेला योग का आनंद लें। स्वयं को स्मृति स्वरूप रखने के लिए एक अव्यक्त मुरली का प्रतिदिन अध्ययन करें। सारे दिन में कुछ भी खाते-पीते, दूध या भोजन को दृष्टि देकर सात बार संकल्प करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ, फिर सेवन करें। एक संकल्प दृढ़ता पूर्वक कर लें कि मेरा जीवन दूसरों को व प्रकृति को पवित्र वायब्रेशन्स देने के लिए है। तो कम से इससे छ: मास में ही आपकी पवित्रता आनंदकारी हो जायेगी।

प्रश्न: पास्ट की कई बातें बार-बार याद आती हैं, जो हमारे पुरुषार्थ में बाधक हैं। हम इनसे मुक्त होना चाहते हैं, कोई उपाय बतायें।

उत्तर: पास्ट में लौटने की शक्ति तो किसी में नहीं है, परंतु मनुष्य का मन बार-बार पास्ट में चला जाता है। इसका कारण है बातों को पकड़कर रखने का स्वभाव। यह आदत उनमें होती है जो सरलचित्त नहीं हैं। कुछ भी बात होने पर उसे पकड़कर बैठ जाता है, उसे छोड़ नहीं पाता। परिणाम यह होता है कि वह अंतर्मन में समाई हुई बुरी बात या बुरी घटना सूक्ष्म रूप में निगेटिव तरंग ब्रेन को भेजती रहती हैं जोकि मस्तिष्क पर विपरीत प्रभाव डालती हैं। जो मनुष्य उन बातों को भूल जाता है, उसका मस्तिष्क निगेटिव एनर्जी से मुक्त रहता है। इसीलिए भूलने में ही भला है।

याद रखें... भगवानुवाच... श्रेष्ठ स्मृति से पुरानी स्मृतियाँ विस्मृत हो जाएंगी। अत: पास्ट को भूलने के लिए बार-बार श्रेष्ठ स्मृति अर्थात् स्वमान का अभ्यास करना चाहिए। हम किसी एक बात को परिवर्तन कर दें जो बहुतकाल से कमज़ोरी के रूप में रही है। बस दृढ़ संकल्प करें कि ये करना है व ये नहीं करना है। प्रतिदिन सवेरे मन को उमंग दिलाने वाले विचारों से व अपने महान लक्ष्य की स्मृति से भरें, इससे अलबेलापन समाप्त हो जाएगा।

प्रश्न: हम अपने घर को मंदिर कैसे बनायें?

उत्तर: पाँच बार घर में बापदादा का आह्वान- जिस घर में पाँच बार बाप आये तो वह घर महान तीर्थ बन जायेगा। भगवान के वायब्रेशन्स जिस घर में पाँच बार फैलने लगें, वह घर निर्विघ्न बन जायेगा। हमें यह निश्चय हो, विश्वास हो कि बाबा आ जाता है। देखें बाबा को आते हुए...देखने में आनंद लें। बाबा ने कहा है कि....भगवान के बच्चे बुलायें...और बाप ना आये, यह हो नहीं सकता। बाप इंतज़ार करते हैं कि कब मेरे बच्चे मुझे मदद के लिए यूज़ करें। जब तुम हज़ार भुजा वाले को छोड़ कर दो भुजा वाले के पास जाते हो, तो बाप सोचते हैं कि अब इनके लिए क्या करें...! अपने घर को यज्ञ बना लें- प्यारे बाबा ने कहा है कि...जो बच्चे अपने घर को बाबा का यज्ञ समझते हैं, वे जैसे कि बाबा के भंडारे से ही खाते हैं...उनके भंडार व भंडारी सदा भरपूर रहते हैं... उनकी ज़िम्मेवारी बाबा पर आ जाती है। अपने घर का मुखिया बाबा को बना लें- हम अपने घर का हेड, मुखिया बाबा को बना लें, तो सब समस्याएँ खत्म हो जाएंगी। पैसे चाहिए...कोई काम है... बाबा को बता दें, सब हो जायेगा। आत्मिक दृष्टि- दो बार घर के सभी सदस्यों को आत्मा देखें...संकल्प करें...ये महान आत्माएं हैं। ये देवकुल की रॉयल आत्माएं हैं। ये इष्ट देव-देवी बनने वाली आत्माएं हैं। घर में रिगार्ड, आदर सम्मान का माहौल बन जायेगा। वातावरण सरल बनाएं। संस्कार सरल होंगे तो वातावरण सरल होगा। हमारे संस्कार टाइट ना हों, वातावरण भारी ना हो...हल्कापन हो। जिन माँ-बाप की स्व-स्थिति अच्छी होगी, उनके बच्चे बिगड़ेंगे नहीं...और ऐसा कुछ है भी, तो सरल रहके परिस्थिति का सामना करें...हल्के रहें। बोल पर अटेंशन- हमारे बोल बहुत मीठे हों। हमारा हर बोल वरदानी हो, स्वमान से भरपूर हो। इष्टदेवी स्वमान का अभ्यास- मैं इष्ट देवी हूँ... इस स्वमान में रहें। इष्टदेवी के वायब्रेशन्स जैसे होंगे, वैसा ही घर का वातावरण होगा। सहयोग के लिए प्रशंसा करें। परिवार में एक दो के कार्यों की प्रशंसा करें, सहयोग करें।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

देखिए 'अपना DTH' में फ्री 24 घंटे 'पीस ऑफ माइंड चैनल' ...उसके साथ 100 अन्य चैनल भी फ्री
अपने डी.टी.एच. डिश के डायरेक्शन का करें परिवनर्तन...
Satellite Position = 75° East, Satellite = ABS-2
LNB Frequency = 10600/10600, Frequency = 12226/12227
Polarization = H, Symbol = 44000
System = MPEG-2(DVB-S) / MPEG-4(DVB-S2)
FEC = 3/4, 22K = On/Auto, Mode = All/FTA
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें... 8104777111/7014140133

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

आपको पता होना चाहिए कि प्रेम आत्मिक होता है, लेकिन आज सभी शारीरिक आकर्षण को प्यार की संज्ञा देते हैं, नाम देते हैं। लेकिन वह ऐसा होता, तो हमेशा चलता, कुछ महीनों, कुछ साल में खत्म नहीं हो जाता। आपको एहसास भी नहीं होगा कि आज मानव का प्रेम दैहिक है, न कि आत्मिक। जिससे देखिए पैदा क्या होता है!

जब भी किसी स्त्री/पुरुष का चित्र हमारे मन के पर्दे पर आता है, उससे अशुद्धता ही आती है। मानव प्रेम जब शुद्ध होता, तब वह प्रेम है, लेकिन जैसे ही वह विकृत होता, या बिगड़ता, तो वो विकार में परिवर्तित हो जाता है।

मानव प्रेम विकृत होकर या बिगड़कर जब देह केन्द्रित होता, अर्थात् वासना, भोग का रूप लेता है, तभी वह काम विकार कहलाता है। जब वह दैहिक सम्बन्धों में पूर्णत: अनुरागात्मक हो जाता है, तो उसे 'मोह' कहा जाता है। मोह के कारण धन के प्रति लालसा बढ़ जाती है, जिसे हम लोभ की संज्ञा देते हैं। प्रेम की विकृति विकार है, उससे ही क्रोध की उत्पत्ति है, जब काम वासना, लोभवृत्ति, मोह ममत्व, स्वार्थ भाव तृप्त न हो।

कुल मिलाकर जितने भी एक्सपेक्टेशन्स (इच्छाएँ) हैं, यदि उनकी पूर्ति ना हो, वो तृप्त न हो। आप सोचिए मन की आशाएँ हैं, अर्थात् वह विकारी हैं। अंग्रेज़ी में भी कहते हैं कि गुस्सा कब आता है, जब

> **मन की व्यथा को कुछ अलग तरह से विस्तार करने की आज हम कोशिश करते हैं। जो कुछ भी उपजता है, वह मन से शुरु होता है, और मन पर ही खत्म हो जाता है। आज जीवन कुछ ऐसा ही तो है, जो कुछ कर रहा है, वो मन ही कर रहा है, अर्थात् हम ही कर रहे हैं, कोई और नहीं!**

'एक्सपेक्टेशन्स डू नॉट मैच विद रियलिटी'।

जबकि प्यार या प्रेम मानव की अपनी नेचर है, उसमें ही वह पला बढ़ा है। वो उसका अपना मूल स्वभाव है। जब व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के साथ दैहिक रूप से जुड़ता है तो उसके अंदर ईर्ष्या, द्वेष, घृणा पैदा हो जाती है। जब काम वासना, मोह, ममता, लोभ वृत्ति आदि की पूर्ति होने में बाधा उत्पन्न होती है। पहले जिसे वह मोहब्बत करता है, उसी से वह घृणा करने लग जाता है। उसी में अवगुण ढूंढने लग जाता है, उसी की निंदा भी शुरु कर देता है, उसके अंदर वैर-विरोध, वैमनस्य पैदा हो जाता है।

आप देखो मन क्या कर रहा है, या ऐसे कहें कि हम क्या कर रहे, बस कारण को नहीं समझ पा रहे। गलती क्या हो रही है, बस समझ नहीं पा रहे हैं। जो चीज़ दिखाई दे रही है, उसे परमानेंट मानकर उससे सम्बन्ध जोड़ना चाहते। ये सब तो पहले भी देखा था ना। इसी को साइंटिफिकली देखें तो हम नाम देते हैं, देह-अभिमान या ईगो। अर्थात् उन चीज़ों से जुड़ना जो हम नहीं हैं तथा जो हमारे नहीं हैं। आपको थोड़ा समझ आ रहा है, हम क्या कहना चाह रहे हैं। बस हमें यही समझना है कि अभिमान, स्वतंत्र रूप से कोई विकार नहीं है, लेकिन जब किसी न किसी रूप से काम, लोभ, मोह वृत्ति की जब तृप्ति होती जाती है, उसी को अभिमान कह दिया।

यदि आसान शब्दों में कहा जाये तो कह सकते हैं कि जब किसी से कोई काम कहें काम वश, क्रोध वश, लोभ वश, और व्यक्ति कर दे तो हम खुश हो जाते हैं, कहते हैं, देखा मैने ऐसे किया। वह संतुष्ट महसूस करने लग जाता है। आप बताओ ये कब तक चलेगा! कभी न कभी तो वो मना करेगा, तब आप दु:खी होने लग जाते हैं। दु:ख या सुख किससे है, जो सही नहीं है वो सही लगता है। बस यही तो समझ है।

मन को वैसे तो सब समझ आता है, बस उसे हमें विज्ञान या साइंटिफिक बनाने की ज़रूरत है। कोई भी हमें दु:ख सुख नहीं दे रहा, हम दु:ख सुख ले रहे हैं। मन की अद्भुत शक्तियों का प्रयोग करने के लिए हमें थोड़ा देह, देह के सम्बन्धों से बुद्धि निकाल अपनी शक्तियों को जागृत करने की आवश्यकता है।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-12-2017

1			2	■	3			■	4
	■	■	5	6		■	■	■	
	■	7	■	8		■	9	10	
11			12	■	13	14	■		■
■	■	15			■		■	16	
17	■	■		■	■		■		■
18		■	19	20	21	■	■	■	■
	■	22	■	23			24	■	25
26	27			■		■		■	
■		■	■	28		■	29		

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. परेशानी, संकट, कष्ट (4)
2. थोड़ा, अल्प (2)
3. पर्वतों का राजा (4)
4. ब्रह्मा की संतान....हो, चार वर्णों में से एक वर्ण (3)
6. भलाई, उपकार, फायदा (2)
7. शिक्षा, समझानी (3)
10. मन को लुभाने वाला, सुन्दर (4)
12. तुम बच्चों को....है मुझ बाप को याद करो, आज्ञा (4)
14. लेकिन, परंतु, घड़ियाल (3)
17. बाबा को सर्वव्यापी अथवा कच्छ मच्छ....कहना यह भी ग्लानी है (4)
20. विशुद्ध, सच्चा, खालिस (2)
21. राम की कथा पुस्तक, महान धर्मग्रन्थ (4)
22. गुण सम्पन्न, हुनरमंद, गुणवान (2)
24. सीताजी के पिता (3)
25. साधना करने वाला (3)
27. अहंकार, अहं (2)

बायें से दायें

1. जो बीता कल्प पहले...., अनुसार (3)
3. ....का एक कदम बढ़ाओ, हज़ार कदम बाप साथ में है (3)
5. गुणगान, अंदर में बाप की....के गीत गाते रहो (3)
8. तला, पेंदा (2)
9. विहार करने वाला, घूमना-फिरना (3)
11. दु:ख, कष्ट, संकट (4)
13. मृत्यु का देवता, यमराज (2)
15. ....तेरी गली में जीना तेरी गली में (4)
16. ....बच्चे हैं फूल सदा मुस्काते हैं (2)
18. दूल्हा, साजन, प्रीतम (2)
19. नाज़ अदा, हाव-भाव (3)
23. रामानंद के गुरू, राम के छोटे भाई (4)
26. मनोहर, सुंदर (4)
28. युद्ध, लड़ाई (2)
29. सोना, गेहूँ, अक (3)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन।

सोनीपत-हरियाणा। सेक्टर 15 के डी.ए.वी. मल्टीपर्पस स्कूल में हरियाणा सरकार द्वारा आयोजित गीता जयंती समारोह के कार्यक्रम में स्पीकर कंवरपाल गुर्जर द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए ब्र.कु. प्रमोद बहन।

झालावाड़-राज.। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, सशक्त बनाओ' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए जिला प्रमुख टीना भील, सी.एम.एच.ओ. डॉ. साजिद खान, डॉ. इकबाल पठान तथा ब्र.कु. मीना।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी। ईद-ए-मिलाद के अवसर पर रूहानी इल्म के ज़रिए 'जन्नत से जहन्नुम की रहनुमाई' डिज़िटल प्रदर्शनी के आयोजन पर स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए एम.जी. पॉलिटेक्निक के मैकेनिकल विभाग के विभागाध्यक्ष इंजीनियर नसिरुद्दीन। साथ हैं ब्र.कु. कैप्टन अहसान सिंह तथा ब्र.कु. शान्ता।

कादमा-हरियाणा। 'वाह ज़िन्दगी वाह' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए नाबार्ड के सहायक महाप्रबंधक सोहनलाल जी, हरियाणा के पूर्व उपनिदेशक डॉ. दलीप सांगवान, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. वसुधा तथा अन्य।

बहल-हरियाणा। मधुमेह नियंत्रण के कार्यक्रम 'मधुर मधुमेह' के समापन अवसर पर मंचासीन हैं डॉ. वलसलन नायर, महंत विकास गिरी जी महाराज, डॉ. सुरेन्द्र सागवान, सरपंच गजानंद अग्रवाल, ब्र.कु. शकुंतला तथा ए.एस.आई. कृष्णन पड़गद।

केन्द्रापाड़ा-ओडिशा। 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' विषय पर आयोजित कॉन्फ्रेन्स में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. कमलेश। साथ हैं ब्र.कु. सुलोचना, तहसीलदार हेमलता बहालिया, डी.आई.पी. आर.ओ. चन्द्रकान्त नायक, ब्र.कु. गीतांजलि तथा अन्य।

पत्रकारिता में स्व सेवा का भाव सर्वोपरि

1111 गुलाब के फूलों से बना गुलदस्ता ब्र.कु. सूर्य, ब्र.कु. गंगाधर तथा ब्र.कु. अनुज को देकर उनका स्वागत करते हुए ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके तथा ब्र.कु. निर्मला। साथ हैं अहमदनगर प्रेस क्लब के अध्यक्ष मन्सूर शेख, महेश देशपांडे तथा अन्य।

अहमदनगर-महा.। अहमदनगर के बी.एस.आर.डी. ग्रामीण विकास अध्ययन केन्द्र में अहमदनगर प्रेस क्लब के साथ ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पत्रकारों तथा पत्रकारिता कर रहे छात्रों हेतु एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में प्रेस क्लब अध्यक्ष मन्सूर शेख तथा उनके प्रेस के सदस्य शामिल थे। इस कार्यक्रम हेतु प्रमुख रूप से माउण्ट आबू से राजयोगी ब्र.कु. सूर्य तथा ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु. गंगाधर एवं दिल्ली से मोटिवेशनल ट्रेनर व जर्नलिस्ट ब्र.कु. अनुज उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में प्रमुख वक्ता के रूप में ब्र.कु. अनुज ने मन की प्रोग्रामिंग की बात की, तथा मन को शक्तिशाली बनाने हेतु कुछ विधियाँ बताईं।

ब्र.कु. गंगाधर ने कहा कि पत्रकारिता के द्वारा हम सबकी सेवा करते हैं, अगर हम स्वयं की सेवा करें तो हम शक्तिशाली बन सकते हैं।

राजयोगी ब्र.कु. सूर्य ने कहा कि हम जिस भाव से लिखते हैं, लोग उसी भाव से उसे पढ़ते हैं। आप यदि सकारात्मक भाव से लिखें तो सभी के अंदर सकारात्मकता आयेगी।

ब्र. कु. अनुज ने माइंड मैनेजमेंट विषय पर सभी को प्रैक्टिकल ट्रेनिंग कराई। कार्यक्रम में डॉ. दीपक हरके ने सभी को संस्था द्वारा की जा रही सेवाओं से अवगत कराया। ब्र.कु. निर्मला ने अपने आशीर्वचन दिये।

स्मरणांजलि में स्मरण किया गया ओम प्रकाश भाईजी की सेवाओं को

विश्व शांति के लिए ब्रह्माकुमारी संस्थान का प्रयास सराहनीय- डॉ. नरेन्द्र धाकड़

इंदौर। वर्तमान समय पूरे देश में अशान्ति और अव्यवस्था व्याप्त है। ऐसे समय में विश्व शांति के लिए ब्रह्माकुमारी संस्थान का प्रयास अत्यंत सराहनीय है। उक्त विचार देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. नरेंद्र कुमार धाकड़ ने इंदौर ज़ोन के संस्थापक ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई जी की प्रथम पुण्यतिथि पर ज्ञान शिखर न्यू पलासिया में आयोजित स्मरणांजलि में व्यक्त किये।

स्मरणांजलि कार्यक्रम के दौरान कैलेण्डर तथा पुस्तक का विमोचन करते हुए डॉ. नरेन्द्र कुमार धाकड़, ब्र.कु. करुणा, ब्र.कु. योगिनी, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. हेमलता, वरिष्ठ पत्रकार कमल दीक्षित, ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. हेमलता तथा अन्य।

उन्होंने भाईजी का स्मरण करते हुए कहा कि उनके मार्गदर्शन में ब्रह्माकुमारी संस्थान ने बहुत तरक्की की है। इस संस्थान के माध्यम से उन्होंने समाज की भलाई के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। जो शिक्षा भाईजी ने अपने जीवन में दिया है, उस पर चलना ही उन्हें हमारी ओर से सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

माउण्ट आबू से आए मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष ब्र.कु. करुणा ने कहा कि ओमप्रकाश भाई जी ने इंदौर में जो साधना की है, उसका लाभ हम लोग ले रहे हैं। ऐसा लगता है कि भाई जी का जन्म ही ब्रह्माकुमारी संस्थान के लिए हुआ था। उन्होंने कहा कि ईश्वर की पहचान न होने के कारण विश्व में अनेक समस्याएँ पैदा हो रही हैं। भाई जी ने अकेले दो हज़ार से ज़्यादा बाल ब्रह्मचारी तपस्वी बहनों को इस कार्य के लिए तैयार किया, जो कि बहुत बड़ी उपलब्धि है।

मुम्बई से आईं उद्योग एवं व्यापार प्रभाग की राष्ट्रीय समन्वयक ब्र.कु. योगिनी ने कहा कि दुनिया में करोड़ों लोग पैदा होते हैं, किन्तु उनमें कुछ लोग ही ऐसे होते हैं जो कि अपने श्रेष्ठ कार्यों से अपना नाम अमर कर जाते हैं। भाई जी ऐसे ही महान विभूति थे। उनके हर कार्य में परिपूर्णता दिखाई देती थी।

ब्रह्माकुमारी संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि ओमप्रकाश भाईजी का जीवन अत्यन्त प्रेरणादायी था। उनका व्यक्तित्व इतना चुम्बकीय था कि वह अपने सम्पर्क में आने वालों को अपना बना लेते थे। वे दूरदर्शी व्यक्ति थे, उन्होंने शक्तिनिकेतन छात्रावास की स्थापना कर अनेक छात्राओं का जीवन श्रेष्ठ बनाने का कार्य किया।

दिव्य जीवन कन्या छात्रावास की नन्हीं बालिकाओं ने भावपूर्ण नृत्य नाटिका का किया प्रदर्शन

प्रारम्भ में दिव्य जीवन कन्या छात्रावास की नन्हीं बालिकाओं ने ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाईजी के जीवन एवं कृतत्व पर आधारित बहुत ही भावपूर्ण नृत्य नाटिक प्रस्तुत कर सबको झकझोर दिया। नृत्यनाटिका के बीच-बीच में बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत आकर्षक नृत्य ने सबको बार-बार ताली बजाने पर मजबूर कर दिया। समारोह में दुर्ग छ.ग. से आए ब्र.कु. युगरत्न ने सुमधुर गीत गाकर सबको भावविभोर कर दिया। समारोह में पूर्व महापौर श्रीमति उमा शशि शर्मा, पूर्व शहर कांग्रेस अध्यक्ष कृपा शंकर शुक्ल, क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. हेमलता, वरिष्ठ पत्रकार कमल दीक्षित ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. अनीता ने किया।

मन की सुखद अवस्था का नाम ही 'शान्ति'

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। स्व-परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन संभव है। हमारे जीवन में जो परिवर्तन होता है, उसका ही प्रभाव दूसरों पर पड़ता है। एक अच्छा डॉक्टर एक अच्छा हीलर भी होता है। जितना वो सकारात्मक ऊर्जा से भरा हुआ होगा, उतनी ही बीमारी जल्दी ठीक हो सकती है। उक्त विचार सुप्रसिद्ध जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ **ब्र.कु. शिवानी** ने ओ.आर.सी. में डॉक्टर्स के लिए 'ब्लेसिंग साइंस विद् स्पीरिच्युअलिटी' विषय पर आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि आज हम शरीर के आधार से एक-दूसरे को जानते हैं और उनसे लेन-देन करते हैं। लेकिन हमें मन की शुभ एवं शुद्ध भावनाओं से आपस में जुड़ना है। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त सचिव **ब्र.कु. बृजमोहन** ने कहा कि संसार में हर चीज़ स्वयं तथा दूसरों के हित के लिए बनी है। तो हम सभी मिलकर जब उनका सदुपयोग करेंगे तो हमें तथा दूसरों को भी स्वाभाविक रूप से खुशी होती है। ओ.आर.सी. निदेशिका **ब्र.कु. आशा** ने कहा कि हमारी शक्तियों का विकास तभी होता है जब हम भीतर से शांत रहते हैं। आंतरिक शान्ति हमें स्वयं से परिचित कराती है। शांति आत्मा का मूल गुण है। कार्यक्रम में विशेष रूप से मुम्बई से आए मोटिवेशनल स्पीकर **प्रो. स्वामीनाथन** ने कहा कि जब भी हम किसी से मिलें तो एक सकारात्मक ऊर्जा के साथ मिलें। जीवन की इस यात्रा में हम अपने साथ सिर्फ यही पॉज़ीटिव ऊर्जा लेकर जाते हैं। लोकनारायण जयप्रकाश अस्पताल की निदेशिका एवं **प्रो. डॉ. सुधा प्रसाद** ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से एक नई ऊर्जा मिलती है। हमारा देश जो एक महान राष्ट्र रहा है, उसके लिए फिर से आध्यात्मिक सशक्तिकरण की आवश्यकता है।

दिल्ली इन्द्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल की वरिष्ठ सलाहकार व स्त्रीरोग विशेषज्ञ **डॉ. उर्मिल शर्मा**, बी.आई.एस.आर. की वरिष्ठ सलाहकार व स्त्रीरोग विशेषज्ञ **डॉ. वी.एल. भार्गव** तथा **डॉ. मंजू गुप्ता** ने भी अपने विचार व्यक्त किये। माउण्ट आबू से आये संस्था के मेडिकल विंग के अध्यक्ष **ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह** ने अपने शब्दों द्वारा सभी का स्वागत किया। दिल्ली से आईं ब्र.कु. मोनिका ने संस्था का परिचय दिया। कार्यक्रम में कार्यशाला के साथ-साथ अनेक विषयों पर भी जानकार वक्ताओं द्वारा चर्चा की गई।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org, mediabkm@gmail.com, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Jan 2017
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।